भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2542

VOLUME : 6 | ISSUE : 7 | MUMBAI, JANUARY 2016 | PAGES : 36 | PRICE : ₹25

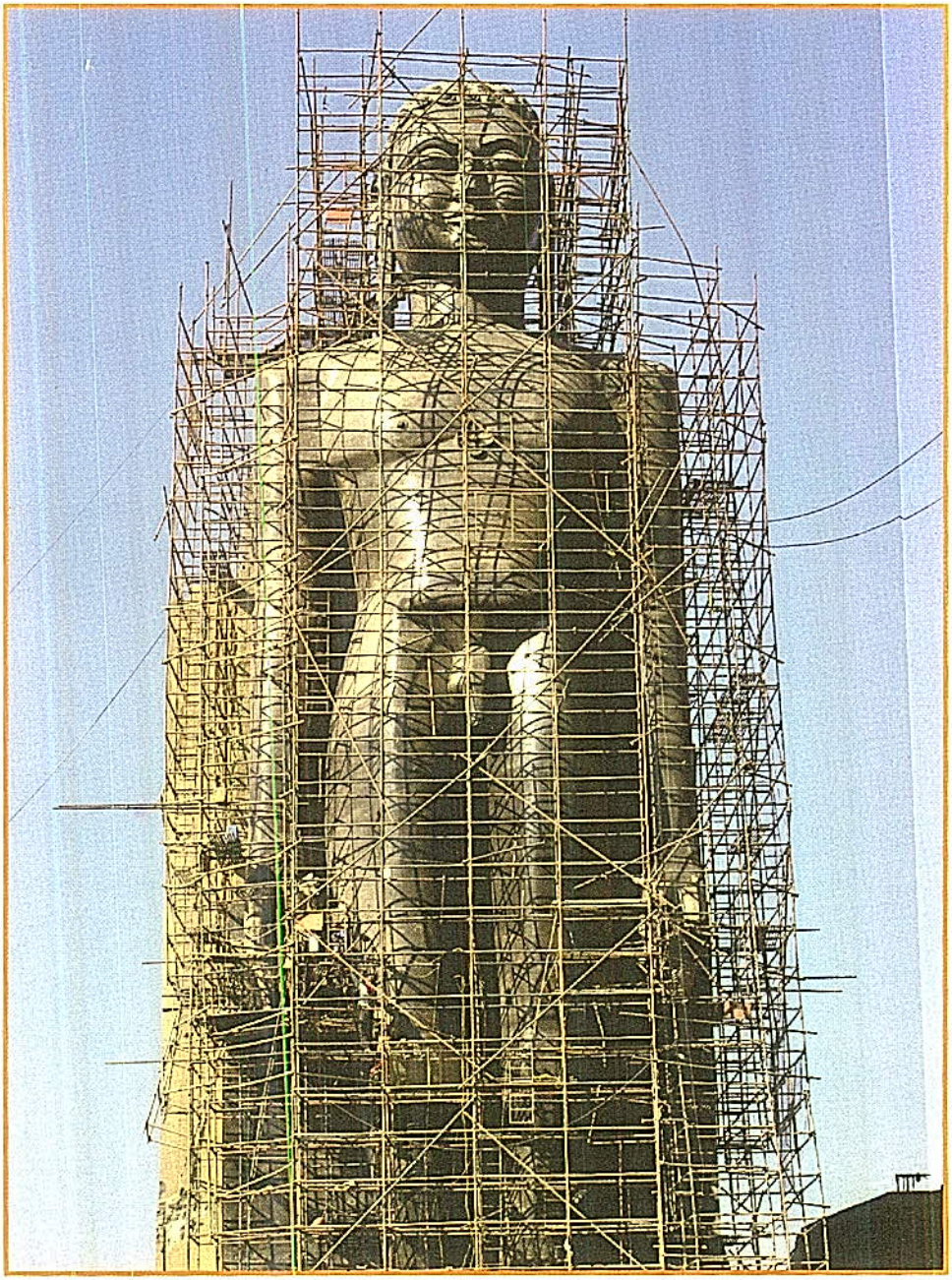

विश्व की विशालतम 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की निर्माणाधीन मनोज्ञ प्रतिमा
श्री मांगीतुंगी जी सिद्धक्षेत्र, महाराष्ट्र

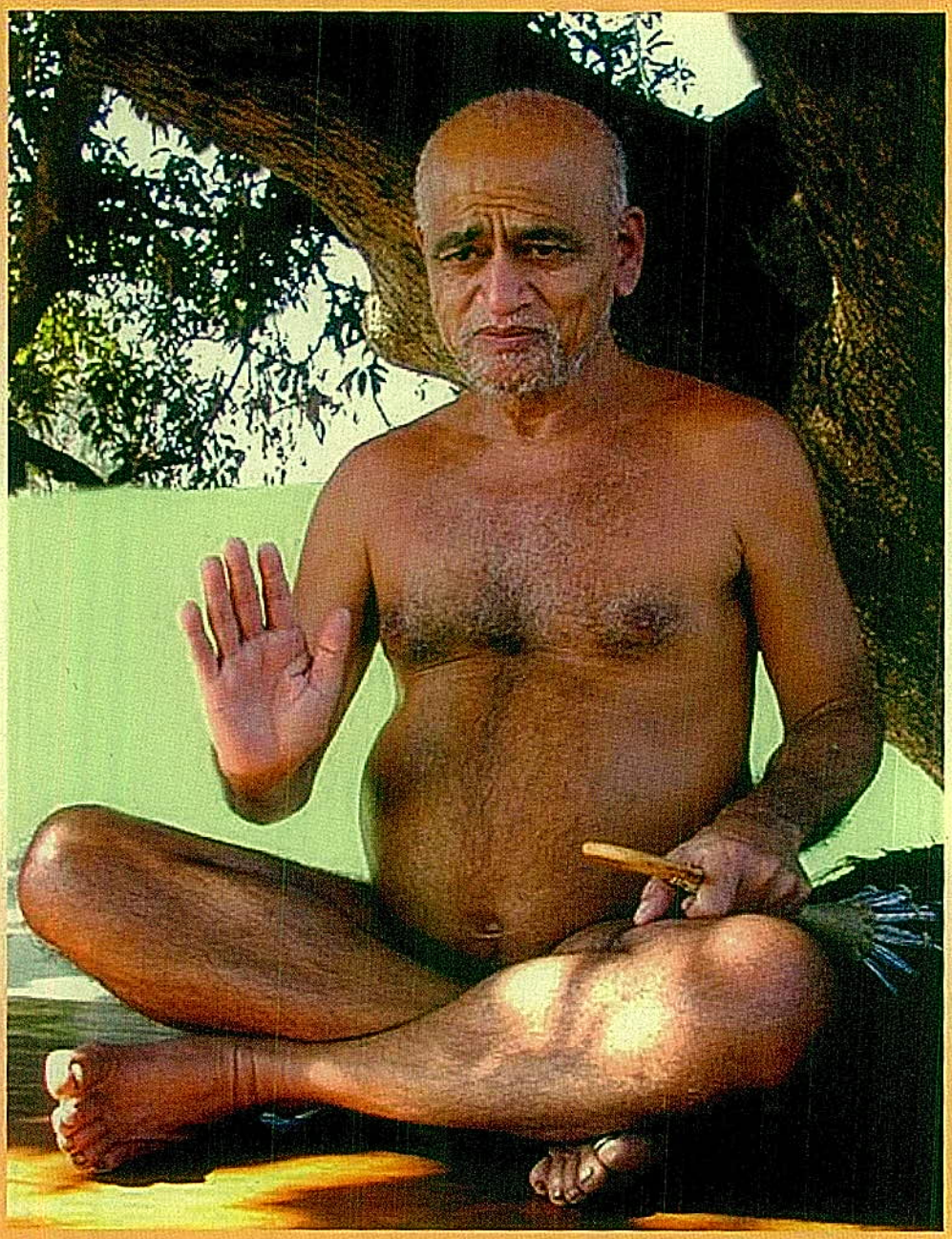

मंत्रों के मेरूदण्ड, द्वादशांग के व्याख्यान आप हैं।
मिटती मानवता के महायान अभियान आप हैं।।
माना कि काल दोष के कारण चौबीसी जन्म नहीं लेती।
लेकिन हम भक्तों को चौबीसी की पहचान आप हैं।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, 250501-5, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

अध्यक्ष की कलम से

धर्मानुरागी भाईयों एवं बहिनो.

'सादर जय जिनेन्द्र

अंग्रेजी वर्ष 2015 बीत गया और 2016 ने नये वर्ष के रूप में दस्तक दे दी। मन खट्टे-मीठे अनुभवों को याद करने में जुट गया। यथार्थ में जीवन की दीवाल से एक ईंट और ढह गई। कभी अति उत्साह के क्षण जब नूतन योजनाओं ने आकार लिया तो कभी अपने सहयोगियों के साथ कुछ नया उपलब्ध करने की प्रक्रिया। तो कभी अनुकूल वातावरण की कमी ने निराशा के भावों को पनपने का माहौल। तो कभी इन विसंगतियों में भी नई राह खोजने की मुस्कान। इन ऊँची-नीची लहरों के बीच कुछ कर गुजरने, कुछ हासिल करने के विश्वास से .... अपने लक्ष्य के समीप पहुंचने का निरंतर प्रयास ... सजीव हो उठा।

अपने मन-मस्तिष्क को समझाने में सफल हुआ ... कि किसी की चार दिन की जिंदगी सौ काम करती है किसी के 'सौ' बरस की जिंदगी में कुछ नहीं होता। 26 माह का समय मुकदमों की तारीखें बदलते-बदलते- पलक झपकते सा बीत गया। लेकिन कर्तव्य बोध ने संतुष्टि के भावों को सहेजते हुए आश्वस्त किया कि .....

कर्मों पर अधिकार तेरा,
मत चिंताकर क्या फल मिलना है
फल चाहे जैसा हो 'तुझको',
कर्म निरंतर ही करना है।

तो आइये हम अपने तीर्थंकर भगवंतों की निर्वाण भूमियों की सुरक्षा एवं रक्षा की तैयारियों पर दृष्टि डालें। सम्पूर्ण जैनों को यह समझ लेना चाहिए कि तीर्थयात्रियों की अधिक से अधिक संख्या में तीर्थों के दर्शन-वंदना करने पर ही तीर्थ सुरक्षित रह पायेंगे। तीर्थों पर चल रहे कानूनी मुकदमों के पीछे देश की शीर्ष संस्थाओं का आर्थिक एवं कानूनी जन सहयोग ही कार्यकारी सिद्ध होगा। **सिर्फ बैठकें कर कागजी सुझावों से कुछ हासिल नहीं होगा। 'सल्लेखना-संथारा' के निर्णय के विरोध में बने देशव्यापी जन आंदोलन एवं समर्थन जैसा माहौल ही तीर्थक्षेत्रों की रक्षा कर सकेगा। जागो जैनों जागो।**

हम सभी को आत्म निरीक्षण करना आवश्यक है कि हमारी संस्था ने एवं हम पदाधिकारियों ने पिछले 5-10 वर्षों में तीर्थक्षेत्रों की रक्षा के लिए क्या योगदान दिया? ... यदि कुछ ठोस नहीं किया तो अभी भी जागना होगा।

1. श्री सिद्धक्षेत्र गिरनार जी की तीर्थयात्राएं पूरे देश से-वर्ष भर आयोजित की जानी चाहिए तथा तलहटी में बनी धर्मशालाओं में नि:शुल्क या

रिश्तों में जब झूठ बोलने की आवश्यकता महसूस हो तो समझ लो परेशानी आपका दरवाजा खटखटा रही है

नाममात्र शुल्क पर सामान्य परिस्थितियों के तीर्थयात्रियों के लिए व्यवस्थाएं होनी चाहिए।

दिगम्बर जैन समाज की पांचों शीर्ष संस्थाओं को नियमित तीर्थयात्राओं के लिए योगदान अनिवार्य होगा। वरना आने वाले समय में जैन अपनी पूजा-अर्चना विधियों से वंचित कर दिए जा सकते हैं।

जूनागढ़ का प्रशासन, वोट की राजनीति एवं गेरुआ रंग के अत्याधिक दबाव के चलते - जैन तीर्थयात्रियों के अपमान एवं अधिकार हनन की अनदेखी करता रहेगा।

2. श्री सम्मेदशिखर जी 'शाश्वत तीर्थ' : जो जैनों का हजारों-हजार वर्षों से सबसे पवित्र, सर्वोच्च तीर्थ है उसे भी जैनेतर सियासत एवं प्रशासन नई-नई योजनाओं का प्रलोभन परोसकर-'पर्यटन स्थल' बनाने की घोषणाएं करता रहता है।

तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा उपरोक्त संदर्भ में समय-समय पर झारखण्ड प्रदेश के मुख्यमंत्री एवं प्रशासनिक अधिकारियों के समक्ष अपना गम्भीर विरोध दर्ज कराया है, लेकिन देश भर से सभी जैन धर्मावलंबियों द्वारा यह बात झारखण्ड सरकार को चेतावनी के रूप में दर्ज करानी होगी कि सम्मेदशिखर जी पर्वत / पारसनाथ हिल हमारे तीर्थ वंदना, पदयात्रा, भक्ति पूर्वक 27 कि.मी. की वंदना का पवित्र सिद्धक्षेत्र है हमेशा-हमेशा से। यह किसी भी कीमत पर मनोरंजन, आमोद-प्रमोद या पर्यटन का स्थल नहीं है। देश एवं विदेश का जैन जगत - मधुबन ग्राम तक पहुंचने वाले रास्ते, सुविधाएं, प्रदूषणयुक्त वातावरण, चिकित्सा सुविधाएं तथा शुद्ध पेयजल की उपलब्धता - तलहटी एवं पर्वत के चारों ओर बसे ग्रामों को विकसित करने का स्वागत करेगा, लेकिन 'पारसनाथ पर्वत' की पवित्रता कम करने वाली किसी भी योजना का पुरजोर विरोध करेगी।

तो आइये हम सभी व्यक्तिगत एवं संयुक्त रूप से तीर्थों की रक्षा का संकल्प लें।

'जय सम्मेद शिखर जी'

' जय गिरनार जी

मुश्किलें दिल के इरादे आजमाती हैं
ख्वाब के परदे निगाहों से हटाती है ।
हौसला मत हार गिरकर ऐ 'मुसाफिर"
ठोकरें इन्सान को चलना सिखाती हैं ।।

जय जय गुरुदेव

आपका ही,

सुधीर जैन

मीठा बोलने वाला कभी हितैषी नहीं होता, नमक की तरह कड़वा ज्ञान देने वाला ही सच्चा हितैषी होता है

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 6 अंक 7 जनवरी 2016

परामर्श मण्डल

डॉ. नीलम जैन, पुणे
श्री संजय जैन 'मैक्स', इंदौर
श्री श्रीकिशोर जैन, दिल्ली

संपादक

उमानाथ आर. दुबे
डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती', बुरहानपुर (मानद्)

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370

e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210100017881 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखको के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

ईस्वी सन् 2016 स्वागत है तुम्हारा	6
इंडिया नहीं है भारत की गौरव-गाथा-आचार्यश्री विद्यासागरजी	7
चांदखेड़ी के आदिनाथ को मन, वच, तन से ध्याता हु	8
लोकतंत्र की हवा में जैन धर्म का ह्रास	14
कब चेतेगी जैनसमाज ? क्या कर रही हैं जैन संस्थाएं ?	16
श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ तपोदय तीर्थक्षेत्र कमेटी बिजौलियां	21

रविवार दिनांक 7 फरवरी, 2016 को प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ स्वामी का निर्वाण महोत्सव धूमधाम से मनाने की अपील

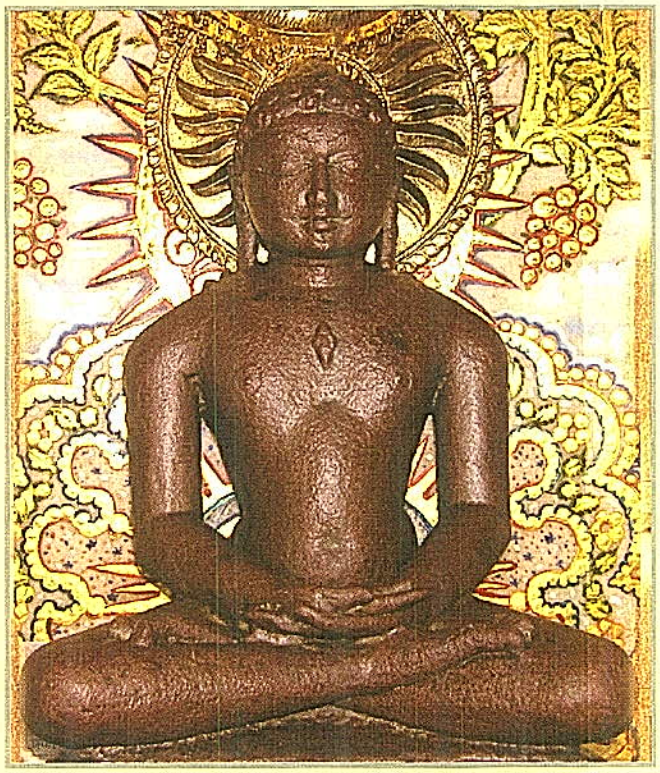

समग्र जैन समाज से यह अपील है कि रविवार दिनांक 7 फरवरी, 2016 को जैन धर्म के प्रथम आदि तीर्थंकर भगवान आदिनाथ का निर्वाण महोत्सव बड़े ही धूमधाम से बनाएं। जैसा कि हम सभी अपने अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर की जन्म जयंती मनाते हैं।

निवेदक,
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार

संसार में सबसे बड़ा पाप रात्रि भोजन है और सबसे बड़ा पुण्य प्रभु की पूजा है

ईस्वी सन् 2016 स्वागत है तुम्हारा

—कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती'

वीर निर्वाण संवत् 2542 के अन्तर्गत ईस्वी सन् 2016का आगमन हम सबके लिए शुभ हो; ऐसी हमारी कामना है। हर आने वाले वर्ष का हम इसी तरह स्वागत करते हैं किंतु वह कितना शुभ होता है और कितना अशुभ; यह हमारे सोच-विचार और कार्यों पर निर्भर करता हूँ। हमारा जीवन ईमानदारी का होना चाहिए। हमारे कार्य पुरुषार्थ से जुड़े हुए होना चाहिए। आजकल एस.एम.एस. का जमाना है। कुछ एस.एम.एस. ऐसी भी आते हैं जो बड़े प्रेरणादायी होते हैं। कुछ यहाँ उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत हैं-

रातभर गहरी नींद आना इतना आसान नहीं
उसके लिए दिन भर 'ईमानदारी' से जीना पड़ता है।

हमें अपने कृतित्व से व्यक्तित्व का निर्माण करना चाहिए। इसके लिए यह संदेश है कि-

जो निखर कर बिखर जाये वह कर्त्तव्य है।
जो बिखर कर निखर जाये वह व्यक्तित्व है।।

आज समाज इस बात से बहुत चिंतित है कि कन्याओं की भूण हत्या हो रही है तो दूसरी ओर बेटे भी वृद्ध माता-पिता का ध्यान नहीं रख रहे हैं; ऐसे में यह संदेश महत्त्वपूर्ण है कि-

वृद्धाश्रम में माँ को छोड़कर वो पलटा ही था कि-माँ ने आवाज देकर बुलाया....बेटा अपने मन में किसी प्रकार का बोझ मत रखना, तुझे पाने के लिए तीन बेटियों की भ्रूण हत्या की थी....सजा तो मिलनी ही थी....।

हमें व्यक्ति और विचार में विचार को अधिक महत्त्व देना चाहिए और विचारवान व्यक्ति का साथ लेना चाहिए और जिनसे रिश्ता बना हो, उनसे रिश्ता निभाना भी चाहिए। यह संदेश हमें इस रूप में मिलता है कि-

प्यार इन्सान से करो, उसकी आदत से नहीं।
रूठों उनकी बातों से मगर उनसे नहीं।
भूलो उनकी गलतियाँ पर उन्हें नहीं,
क्योंकि रिश्तों से बढ़कर कुछ भी नहीं।

हमें विरोधी जनों से सावधान रहना चाहिए, उनसे

घबराना नहीं चाहिए; क्योंकि सफल होने के लिए यदि मित्रों की आवश्यकता है तो अधिक सफलता के लिए अच्छे शत्रु भी। जब शत्रु सामने होता है तो व्यक्ति सावधानी से अपने कदम आगे बढ़ाता है। छिपे शत्रुओं से प्रकट शत्रु कम नुकसान देह होते हैं। यह जरूरी नहीं कि जो कार्य आप कर रहे हैं या आपने किया है उसका श्रेय आपको मिले ही; क्योंकि आप उस दुनिया में रहते हैं जहाँ जलती तो तेल और बाती है किन्तु लोग क ` हैं दीपक जल रहा है। अगर श्रेय के लिए ही कार्य करोंगे तो कार्य के प्रति प्रेम कभी जागृत नहीं होगा। यह संदेश भी जीवन के लिए प्रेरणादायी है कि-

कभी किसी को धोखा देकर यह मत सोचो
कि वो कितना बेवकूफ था
बल्कि यह सोचो कि
उसे तुम पर कितना विश्वास था?

नये वर्ष में कुछ नया करने का संकल्प लें। अपने अधूरे काम और अधूरेपन को भरने का प्रयास करें। आपकी जीवन यात्रा में हम आपके साथ हैं। आपके सहयोग के प्रति हम कृतज्ञ हैं। हमारे लिए तो-

रिश्ते बनते रहें, इतना ही बहुत है
सब हँसते रहें, इतना ही बहुत है।
हर कोई हर वक्त, साथ नहीं रह सकता।
याद एक दूसरे को करते रहें, इतना ही बहुत है।।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं । इस वर्ष भी आपकी यात्राओं के केन्द्र में भारतवर्ष के पावन तीर्थक्षेत्र रहें ताकि आप सब पुण्यार्जन कर सकें। ईस्वी सन् 2016 (वीर निर्वाण संवत् 2542) आप सभी के लिए मंगलमय हो, सुखदायक हो। जैनम् जयतु शासनम् ।

इंडिया नहीं है भारत की गौरव-गाथा-आचार्यश्री विद्यासागरजी

प्रस्तुति : निर्मल कुमार पाटोदी, इंदौर

रहली (जिला-सागर (म.प्र.) में पंचकल्याणक महामहोत्सव के अंतिम दिवस पर गजरथ यात्रा के बाद चारों दिशाओं से भक्तिवश पधारे लगभग एक लाख जैन-अजैन श्रद्धालुओं को उद्बोधन देते हुए योगीश्वर कन्नड़ भाषी संत विद्यासागरजी ने धर्म-देशना की अपेक्षा राष्ट्र और समाज में आए भटकाव का स्मरण कराते हुए कहा कि आज जवान पीढ़ी का खून सोया हुआ है। कविता ऐसी लिखो कि रक्त में संचार आ जाय। उसका इरादा 'इंडिया नहीं 'भारत' के लिए बदल जाय। वह पहले भारत को याद रखें। भारत याद रहेगा, तो धर्म-परम्परा याद रहेगी। पूर्वजों ने भारत के भविष्य के लिये क्या सोचा होगा? उन्होंने इतिहास के मंत्र को सौंप दिया। उनकी भावना भावी पीढ़ी को लाभान्वित करने की रही थी। वे भारत का गौरव, धरोहर और परम्परा को अक्षुण्ण चाहते थे। धर्म की परम्परा बहुत बड़ी मानी जाती है। इसे बच्चों को समझाना है। आज जिंदगी जा रही है। साधना करो। साधना अभिशाप को भगवान बना देती है। जो हमारी धरोहर है। जिसे हम गिरने नहीं देंगे। महाराणा प्रताप ने अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया। उनके और उन जैसों के स्वाभिमान बल पर हम आज हैं।

भारत को स्वतंत्र हुए सत्तर वर्ष हो गए हैं। स्वतंत्र का अर्थ होता है- 'स्व और तंत्र'। तंत्र आत्मा का होना चाहिए। आज हम, हमारा राष्ट्र एक-एक पाई के लिए परतंत्र हो चुका है। हम हाथ किसी के आगे नहीं पसारें। महाराणा प्रताप को देखो, उन जैसा स्वाभिमान चाहिए। उनसे है भारत की गौरवगाथा। आज हमारे भारत की पूछ नहीं हो रही है? मैं अपना खजाना आप लोगों के सामने रख रहा हूं। आप लोगों में मुस्कान देख रहा हूं। मैं भी मुस्करा रहा हूं। हमें बता दो, भारत का नाम 'इंडिया' किसने रखा? भारत का नाम 'इंडिया' क्यों रखा गया? भारत 'इंडिया' क्यों बन गया? क्या भारत का अनुवाद 'इंडिया' है? इंडियन का अर्थ क्या है? है कोई व्यक्ति जो इस बारे में बता सके? हम भारतीय हैं, ऐसा हम स्वाभिमान के साथ कहते नहीं हैं। अपितु गौरव के साथ कहते हैं, 'व्ही आर इंडियन'। कहना चाहिए- 'व्ही आर भारतीय'। भारत का कोई अनुवाद नहीं होता। प्राचीन समय में 'इंडिया' नहीं कहा जाता था। भारत को भारत के रूप में ही स्वीकार करना चाहिए। युग के आदि में ऋषभनाथ के ज्येष्ठ पुत्र 'भरत' के नाम पर भारत नाम पड़ा है। उन्होंने भारत की भूमि को संरक्षित किया है। यह ही आर्यावर्त 'भारत' माना नाम गया है। जिसे 'इंडिया' कहा जा रहा है। आप हैरान हो जावेंगे, पाठ्य-पुस्तकों के कोर्स में 'इंडियन' का जो अर्थ लिखा गया है, वह क्यों पढ़ाया जा रहा है? इसका किसी के पास क्या कोई जवाब है? केवल इतना लिखा गया है कि अंग्रेजों ने ढाई सौ वर्ष तक हम पर अपना राज्य किया, इसलिए हमारे देश 'भारत' के लोगों का नाम 'इंडियन' पड़ गया है। इससे भी अधिक विचार यह करना है कि चीन हमसे भी ज्यादा परतंत्र रहा है। उसे हमसे दो या तीन साल बाद स्वतंत्रता मिली है। उससे पहले स्वतंत्रता हमें मिली है। चीन को जिस दिन स्वतंत्रता मिली थी, तब के सर्वे सर्वा नेता ने कहा था कि हमें स्वतंत्रता

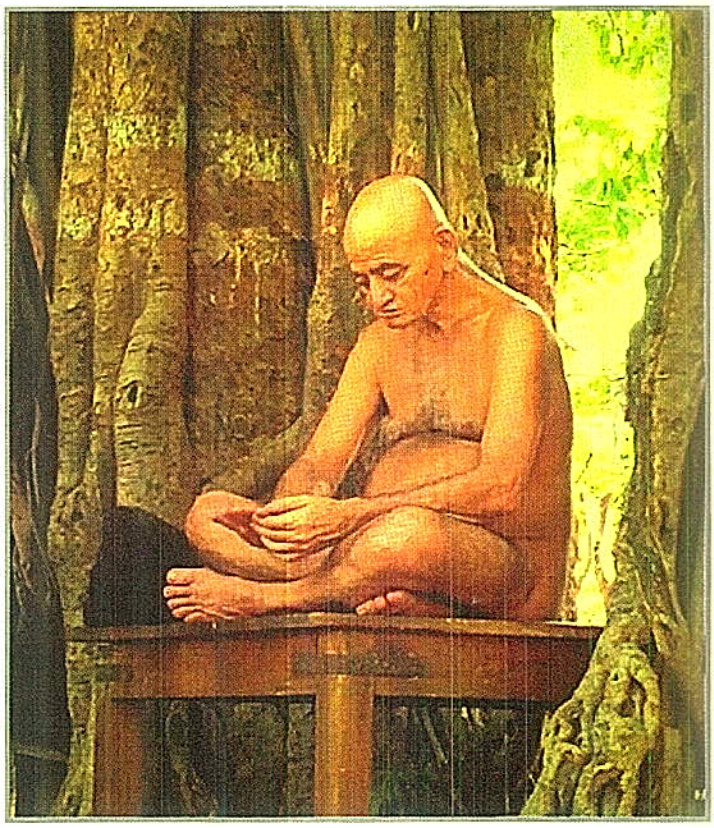

की प्रतीक्षा थी। अब हम स्वतंत्र हो गए हैं। अब हमें सर्वप्रथम अपनी भाषा चीनी को सम्हालना है। परतंत्र अवस्था में हम अपनी भाषा को कायम रख नहीं सके थे। साथियों ने सलाह दी थी कि चार-पाँच साल बाद अपनी भाषा को अपना लेंगे। किन्तु मुखिया ने किसी की सलाह को नहीं मानते हुए चीनी भाषा को देश की भाषा घोषित किया। नेता ने कहा चीन स्वतंत्र हो गया है और अपनी भाषा चीनी को छोड़ नहीं सकते हैं। आज की रात से चीन की भाषा चीनी प्रारम्भ होगी और उसी रात से वहाँ चीन की भाषा चीनी प्रारम्भ हो गयी। भारत में कोई ऐसा व्यक्ति है जो चीन के समान हमारे देश की भाषा तत्काल प्रारम्भ कर दे?

कोई भी कठिनाई आ जाय देश के गौरव और स्वाभिमान को छोड़ नहीं सकते हैं। सत्तर वर्ष अपने देश को स्वतंत्र हुए हो गए हैं। हमारी भाषाएं बहुत पीछे हो गयी हैं। इंग्लिश भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने की गलती ही है। मैं भाषा सीखने के लिए इंग्लिश या किसी भी अन्य भाषा को सीखने का विरोध नहीं करता हूं। किन्तु देश की भाषा के ऊपर कोई अन्य भाषा नहीं हो सकती है। इंग्लिश भारत भाषा कभी नहीं थी और न है। वह अन्य विदेशी भाषाओं के समान ज्ञान प्राप्त करने का साधन मात्र है। विदेशी भाषा इंग्लिश में हम अपना सब कुछ काम करने लग जाय, यह गलत है। हमें दादी के साथ दादी की भाषा जो यहाँ बुंदेलखण्डी है उसी में बात करना चाहिए। जो यहां सभी को समझ में आ जाती है। मैं कहता हूं ऐसा ही अनुष्ठान करें।

आदमी साधनों से नहीं, साधना से श्रेष्ठ बनता है

चांदखेड़ी के आदिनाथ को मन, वच, तन से ध्याता हु

(अविनेश जैन ललितपुर)

राजस्थान में मुकुन्दरा एवं विंध्याचल पर्वत की श्रृंखलाओं के मध्य झालावाड़ जिले के खानपुर तहसील में श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र हे। यहॉ पर श्री आदिनाथ भगवान की 6 फुट 3 इंच की पदमासन मनोज्ञ प्रतिमा का मंदिर रूपली नदी के मध्य बना हुआ है। यह इतिहास में पहला मंदिर है जो नदी प्रवाह की दिशा बदल कर नदी में बना हुआ है। यह क्षेत्र झालावाड़ से 35 कि.मी. कोटा से 96 कि.मी. बारां रेलवे स्टेशन से 45 कि.मी. अटरू रेलवे स्टेशन से 35 कि.मी. की दूरी पर है।

अतिशय क्षेत्र चांदखेड़ी अतुल्य वैभव व पुरातात्विक जगत की बेजोड़ देन हे। इस मंदिर का निर्माण वि.सं. 1730 मे प्रारम्भ हुआ था। तथा 17 वर्ष बाद वि. सं. 1747 मे इस मंदिर की प्रतिष्ठा हुई। सिलालेखों के अनुसार यह मंदिर कोटा रियासत के महाराजा किशोरसिंह हाड़ा के दीवान श्री किशनदास जी ने बनवाया था। मंदिर के विषय मे प्राप्त जानकारी के अनुसार दीवान किशनदास को स्वप्न मे देवो द्वारा जानकारी मिली की शेरगढ़ के बारहपाटी जंगल मे भगवान आदिनाथ की प्रतिमा है। जिसे मंदिर बनाकर प्रतिष्ठीत करे। दीवान प्रेरणा से अनुप्रेरित होकर अपने ग्राम सांगोद को ले जाना चाहते थे। परन्तु प्रतिमा की गाड़ी रूपली नदी पर रूक गई और प्रतिमा यँहा ही अचल हो गई। जिससे मंदिर नदी मे ही बनवाना पड़ा। यह प्रतिमा 6 फुट 3 इंच की लाल पाषाण की अति मनोज्ञ प्रतिमा है। जिसका वजन 3 टन से अधिक हे। इसका पंचकल्याणक आमेर गददी के भट्टारक श्री जात कीर्ति के निर्देशन मे किशनदास जी मड़िया के द्वारा कराया गया। प्रतिमा पर सं. 512 अंकित है। अर्थात यह प्रतिमा लगभग साड़े पन्द्रह सो वर्श पुरानी है।

इस समय दिल्ली के सिंहासन पर कट्टरपंथी क्रूर मुस्लिम औरंगजेब का शासन था। जिसने अपने शासन मे हिंदु देवी देवताओ एवं जैन मंदिरों का नेस्तनाबूद्व किया था। जिस भौंहरा मे विराजित भगवान आदिनाथ की प्रतिमा सतिशय चमत्कारिक है जिनकी देव व मानव दोनो ही सेवा करते हे। मोहरे मे 24 घंटे पीलसोत जला करती थी।

मंदिर पुरानी पध्दति से 5–6 फुट चोड़ी दीवालो से बनाया था। जो अपने में अनोखा था। इस मंदिर के गर्भगृह में सफेद मार्बल की फार्विंग को एवं गर्भगृह के बाहर के मंदिर में सेन्ड स्टोन की सुन्दर कार्विंग की क्लिाडिंग श्रावक शिरोमणि समाज रत्न श्री अशोक जी पाटनी आर. के. मार्बल किशनगढ़ के सौजन्य से किया गया है। जिससे मंदिर की सुन्दरता में चार चांद लग गये है। मंदिर के गर्भगृह मे अभी स्वर्ण कार्य होना शेश है तथा फर्स में सुन्दर इनले का कार्य होना है।

मंदिर का मुख्य द्वार उत्तराभिमुख है। जहा वर्तमान मे सिंहद्वार कमेठी के तत्कालीन अध्यक्ष स्व. श्री अमोलकचंद जी चूना वाले कोटा व उनके परिवारजन द्वारा बनाया गया हे। तत्कालीन अध्यक्ष अमोलकचंद जी लगभग 20 वर्श तक कमेठी के अध्यक्ष रहे है। जिनके काल में क्षेत्र का सर्वाधिक चहुमुखी विकास हुआ है। मंदिर परिशर मे समवशरण मंदिर बना हुआ है। जिसकी प्रतिश्ठा पूर्व आचार्य देशभूशण जी महाराज के सानिध्य मे हुई। समवशरण के बांयी ओर यात्रि–निवास है जिसमे 50 कमरे सर्व सुविधायुक्त बने हुये है। तथा दांयी और सर्व सुविधा युक्त आचार्य विद्यासागर धर्म सभा हाल बना हुआ हे। जिसमें लगभग 2000 व्यक्ति एक साथ कार्यक्रम देख सुन सकते है। समवशरण मंदिर के दायी और 10 फुट का प्राचीन मानस्तम्भ एवं नंदीश्वर जिनालय है। समवशरण के चारो ओर सुन्दर मनभावन बगीची बनी है। मानस्तम्भ के तीनो ओर 1फुट 6इंच के शिलालेख लगे हुये हे।

आदिनाथ मंदिर के तलघर भौंहरे मे मूलनायक आदिनाथ भगवान की प्रतिमा विराजमान हे। तथा ऊपर के मंडप मे मध्य मे भगवान महावीर भगवान की की अतिप्राचीन प्रतिमा अनेक प्रतिमाओ सहीत विराजमान हे। महावीर भगवान के बाये ओर पार्शवनाथ भगवान की प्रतिमाओ की वेदी हे। तथा मध्य मे प्राचिन प्रतिमा आदिनाथ भगवान की है। तथा दांयी और चंदाप्रभू भगवान सहीत अन्य तीर्थंकरों की वेदी है। जिसके मध्य भगवान सम्भवनाथ की प्रतिमा हे। तथा दाई ओर कोने मे एक तिजोड़ी मे छोटी–छोटी प्रतिमा है। जिनमे सोने चांदी एवं स्फटिक मणी की प्रतिमाये शामिल है। तथा मंडव के अग्र भाग में भगवान पार्शवनाथ की प्राचीन खड़गासन प्रतिमा एवं अन्य प्रतिमाओं की वेदी है। एक वेदी पर भगवान बाहुबलि की छ फुट की प्रतिमा के साथ चार सीमन्धर स्वामी एवं एक नेमीनाथ भगवान की प्रतिमा विराजित है। मंडव में वांई ओर एक गंन्धकुटी है जिसमें सुपार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा हे।

महत्वपूर्ण यह भी है कि मंदिर के मुख्य शिखर पर गंधकुटी बना है न कि मूलनायक भगवान आदिनाथ की प्रतिश्ठा वाले गर्भगृह पर दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चांदखेड़ी के चमत्कार को

दो बातें इंसान को अपनों से दूर कर देती हैं, एक उसका 'अहम्' और दूसरा उसका 'वहम्'

अतिशय क्षेत्र चांदखेड़ी का दृश्य

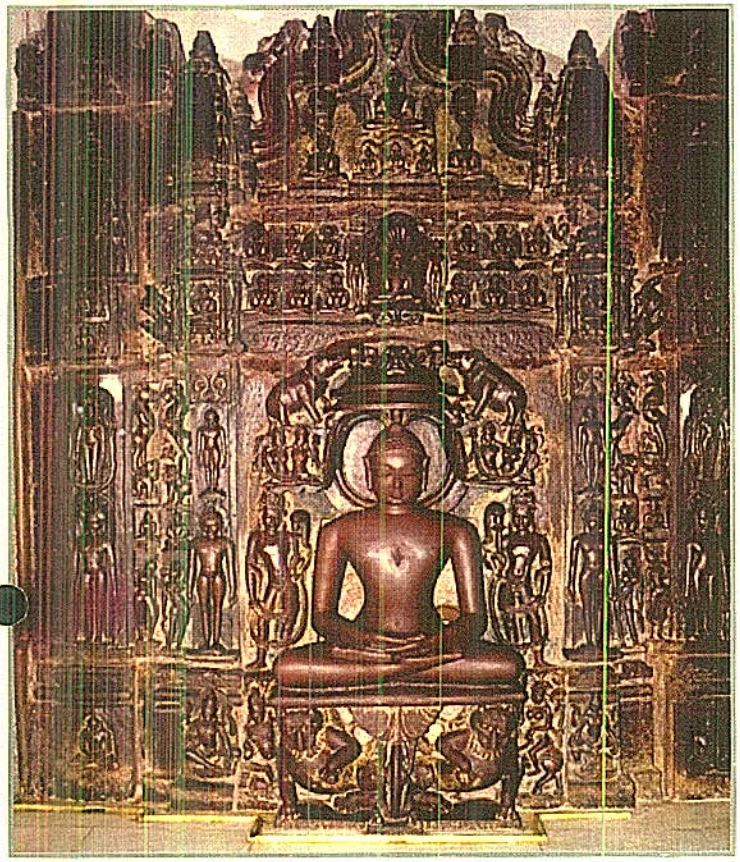

(महावीर भगवान की अति प्राचिन प्रतिमा)

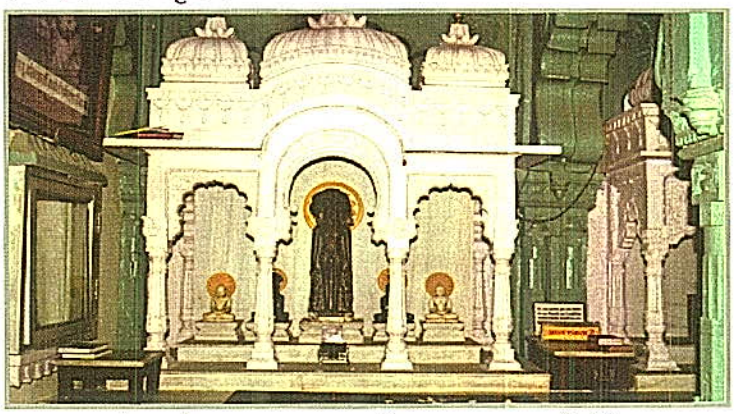

(पार्श्वनाथ भगवान की खड़गासन वेदी)

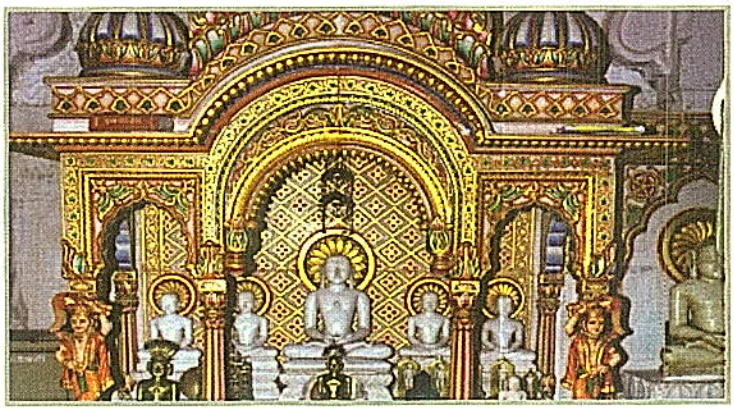

(चन्द्राप्रभू भगवान की वेदी)

(संतशाला)

(कान्फ्रेंस हाल)

(मूलनायक बड़े बाबा आदिनाथ भगवान)

जिसमें जिनदेव विराजमान हैं, वह तीर्थ है (उत्तरपुराण 54, 5)

शब्दो मे निरूपित कर पाना सम्भव नहीं हें। इस दिव्यानंद को दर्शन से ही महसुस किया जा सकता हे। वर्तमान में प्रबन्धकार्यकारिणी के अध्यक्ष श्री गुलाबचंद जी चूना वाले, कार्याध्यक्ष इ. श्री अजय जी बाकलीवाल, महामंत्री श्री महावीर प्रसाद जैन, मुख्य संयोजक लाभचन्द सुरलाया सारोला कोशाध्यक्ष के.सी. जैन एवं उपाध्यक्ष महेन्द्र कांसल सहित समस्त प्रबन्धकार्यकारिणी समिति के पदाधिकारी यात्रियो की सुविधा के लिये सतत प्रयत्नशील है। साधुवृन्दो के रूकने के लिये कमेठी के निर्माणमंत्री श्री राजेन्द्र जी हरसौरा, एवं बन्धु हुकमचंद काका, प्रकाशचंद हरसौरा की ओर से 51 कमरो की संतशाला का निर्माण किया गया है। जिसमे आचार्य कक्ष को विशेश स्थान दिया गया है। इसी मे एक कान्फ्रेंस हाल है जिसमे ए.सी. एवं माईक से सुविधायूक्त बनाया गया हे। जो भारत के किसी भी क्षेत्र पर स्थित नही है।

साधूजन के आहार के लिये 16 कमरो की सुविधायूक्त संतआहारशाला का निर्माण किया गया है। क्षेत्र पर एक सरस्वती भवन बनाया है जिसमे जिनवाणी, प्राचीन शास्त्र के अतिरिक्त सैकड़ो पांडुलिपीया सुव्यवस्थित रखी गई है। सुरक्षा हेतु क्षेत्र में सी.सी. केमरा भी लगाये गये है। क्षेत्र का कार्यालय भी अति आकर्शित कम्प्यूटर सुविधायूक्त बनाया गया हे। मंदिर का उतरी द्वार जो बहुत ही पुराना एवं आकर्शक बना है। परन्तु सैकड़ो वर्श से आतंकियो के आतंक के कारण बंद था। जिसे संतशिरोमणी परम पूज्य आचार्य श्री विधासागर जी महाराज के आर्शिवाद से उनके परम प्रभावी शिश्य मुनि पुंगव परम पूज्य सुधासागर जी महाराज की प्रेरणा एवं सानिध्य मे सन 2002 मे खोला गया। तभी से इस क्षेत्र के विकास की गंगा बह निकली ओर निरंतर विकास होता जा रहा है।

मंदिर के उतर मे लालपाशाण का 51 फुट का कुबेरद्वार का निर्माण धर्म परायाण स्व. श्री राजकुमार जी बड़जात्या की धर्मपत्नी श्रीमती वंदना बड़जात्या कोटा द्वारा कराया जा रहा है। जो दर्शनीय ही नही अविस्मरणिय होगा जो शीघ्र पूर्णता की ओर हे। मुख्य मंदिर के चारो ओर लाल पाशाण की कलाकारी से युक्त त्रिकाल चोबीसी का निर्माण किया गया हे। जिसमे पदमासन मूर्तिया विराजित होगी। प्रत्येक वेदी के सम्मुख लाल पाशाण की भक्ताम्बर काव्य की सुंदर रचना की गई है। तथा ऊपर की ओर खड़गासन युक्त त्रिकाल चोबिसी का निर्माण किया गया हे। तथा मंदिर के चारो ओर 20 तीर्थकर की चार चोकिया बनाई गई है। मुख्य मंदिर के उपर सुंदर लाल पाशाण का मंडप बनाया हे। तथा मंदिर के मूल शिखर को सुंदर बनाया गया हे।

मंदिर के ईसान कोण में मंदिर की व्यवस्था हेतु 150 फुट गहरा पक्का कुआ का निर्माण भी किया गया है। मंदिर के मुख्यद्वार सिंहद्वार के आगे एक सुंदर संगमरमर का चोहमुखा इन्द्रवाला मानस्तम्भ बना है। जिसकी शोभा दर्शनीय हे। मंदिर के पूर्व अंदर उतर पूर्व मे सुन्दर गार्डन का निर्माण किया हे। जिसके चारो ओर सुंदर लालपाशाण के बरामदे बने हे। बगीचो मे सुंदर लाईट से गार्डन की शोभा मे चार चांद लग जाते हे।

क्षेत्र पर यात्रियों की सुविधा के लिये सशुल्क भोजनालय की सुंदर व्यवस्था की है। जिसमे यात्रियो के भोजन के अतिरिक्त एक मिठाई व नमकीन भी दिया जाता हे। तथा यात्रियो की सुविधा हेतु एक केन्टीन भी है। जिसमे दुध,चाय,नमकिन, नाश की सुंदर व्यवस्था हे। यात्रियो की सुविधा के लिये 17 कमरे ए. सी. व 45 कमरे लेटबाथ अटेच डबल बेड के है। 50 कमरो मे गर्म पानी की व्यवस्था हे। तथा पीने के लिये शुद्व आर. ओ. शोधित पानी की व्यवस्था की गई है। अतिशय क्षेत्र चांदखेड़ी ही नाम रखने मे ऐतिहासिक कारण छिपे हे। सैकड़ो वर्श पूर्व के इतिहास मे ब्रिटिस कालीन दस्तावेजो एवं जनश्रुतियो मे आलेखो एवं शिलालेखो से स्पश्ट उल्लेख हे कि इस मंदिर के भू–गर्भ मे जैन धर्म के आठवे तीर्थकंर चन्द्रप्रभू भगवान की रत्नमयी प्रतिमा विराजमान है।

परम पूज्य राश्ट्रसंत शिरोमणी विद्यासागर आचार्य के परम शिश्य मुनि पूंगव सुधासागर जी महाराज का 2002 मे क्षेत्र मे आगमन हुआ। उन्हे माघ शुल्क एकादशी सं. 2058 की मध्यरात्री को स्वप्न मे दैवीय शक्ति ने भू गर्भ में छिपी रत्नमयी जिन प्रतिमा का मार्ग बताया जिसके फलस्वरूप मुनी श्री ने अपने संघ के छुल्लक श्री गंभीर सागर जी छुल्लक श्री धेर्यसागर जी के सहयोग से भू गर्भ से फाल्गुन सुदी दशमी दिनांक 24 मार्च 2002 की पोने 3 फुट की स्फटीक मणी की चंद्रप्रभू भगवान की पदमासन एवं 17 इंच की पार्श्वनाथ भगवान व 15 इंच की अरहंत भगवान की प्रतिमा को निकाला तथा देव–वाणी के अनुसार 15 दिन तक यह प्रतिमाये दर्शनार्थीयो के दर्शनार्थ रखी रही। इन प्रतिमाओ के ऊपर आते ही दर्शनार्थियो की भीड़ आने लगी ओर 15 दिन मे लगभग 25 लाख यात्रियो ने भगवान के दर्शन कर जयघोश किया। प्राचीन दस्तावेजो के व जनश्रुतियो के अनुसार मुस्लिम शासको के विद्वंसकारी आक्रमणो से बचाने हेतु भू गर्भ मे छिपा दिया था जिन्हे देवो (यक्षो) ने अपनी सुरक्षा मे रख

अतिशय क्षेत्र चांदखेड़ी का दृश्य

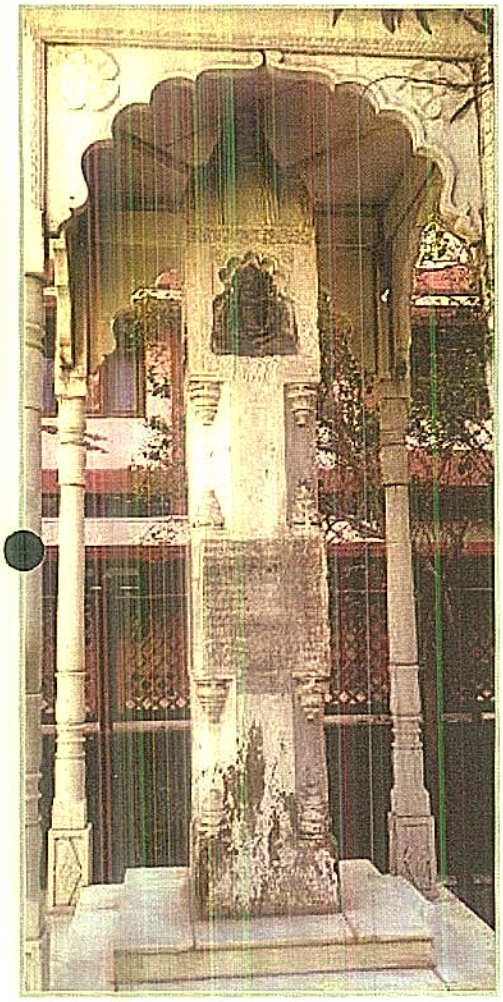

(प्राचिन मानस्तम्भ)

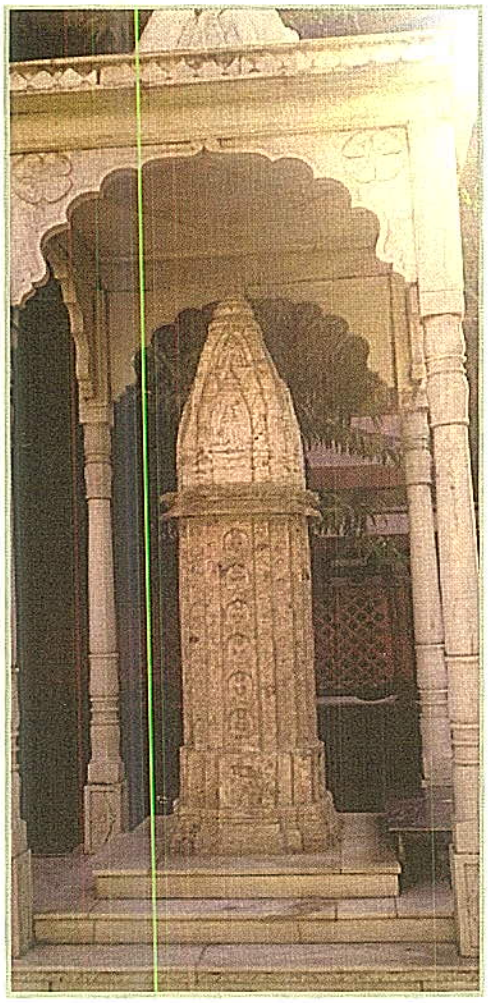

(प्राचिन नन्दीश्वर)

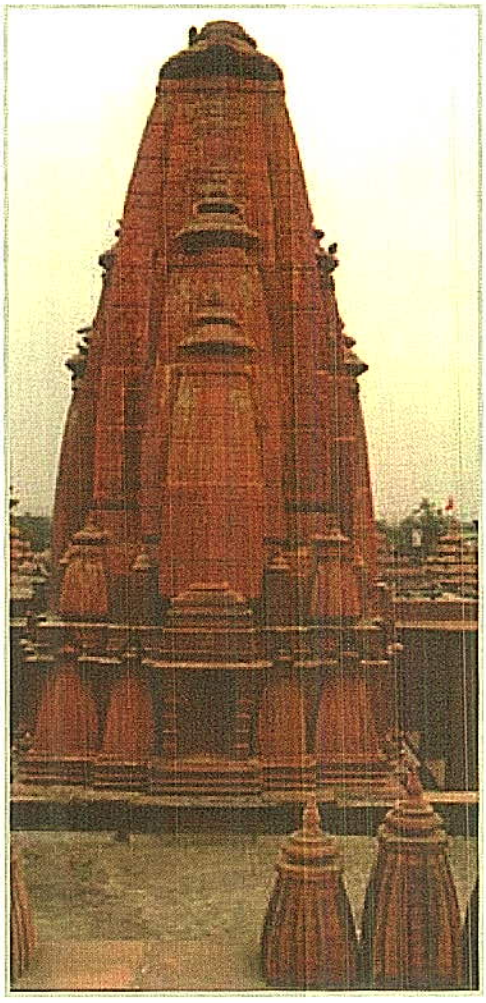

(मंदिर का शिखर)

(यात्रि–निवास)

पैसे से सुख कभी खरीदा नहीं जाता, और दुःख का कोई खरीदार नहीं होता

अतिशय क्षेत्र चांदखेड़ी का दृश्य

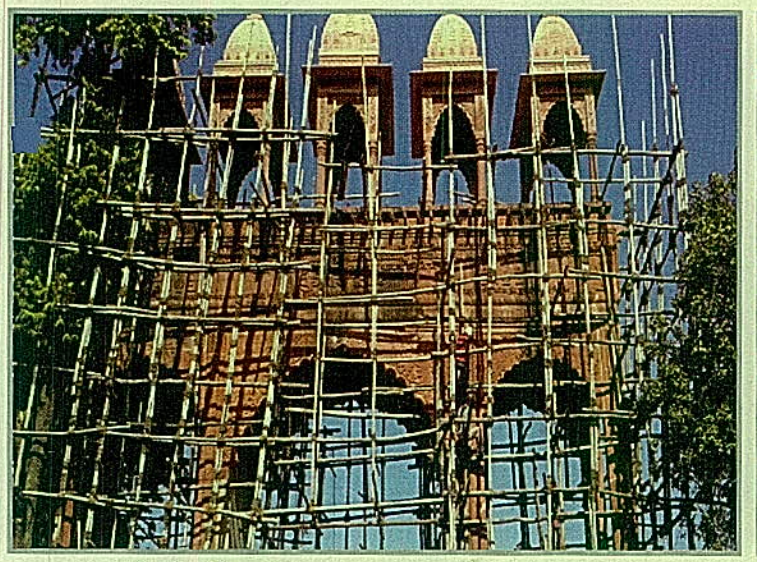

(निर्माणधिन 51 फुट उतंग कुबेरद्वार)

(भौंयरे के अन्दर का दृश्य)

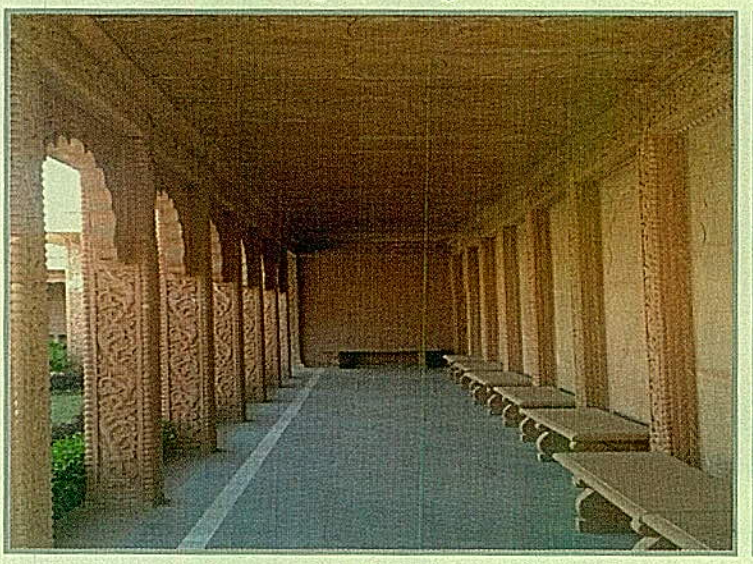

(मानस्तम्भ के पिछे के बरामदे)

(संत सुधासागर पब्लिक स्कूल)

(इन्द्र वाला मानस्तम्भ)

(यात्रि–निवास)

न्यायनिष्ठ की सम्पत्ति कभी कम नहीं होती । वह दूर तक पीढ़ी दर पीढ़ी चली जाती है (तिरुवल्लूर)

अतिशय क्षेत्र चांदखेड़ी का दृश्य

(सिंहद्वार)

(मंदिर का प्रवेश द्वार)

(गर्भगृह के अन्दर की मार्बल की कार्विन्ग)

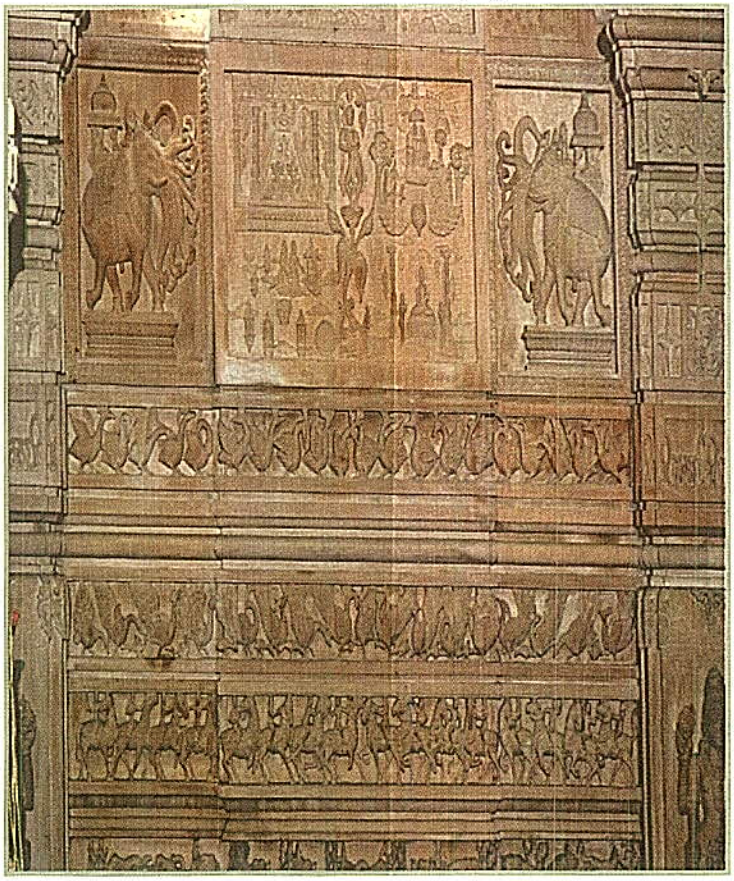

(गर्भगृह के बाहर मण्डप मे कार्विन्ग)

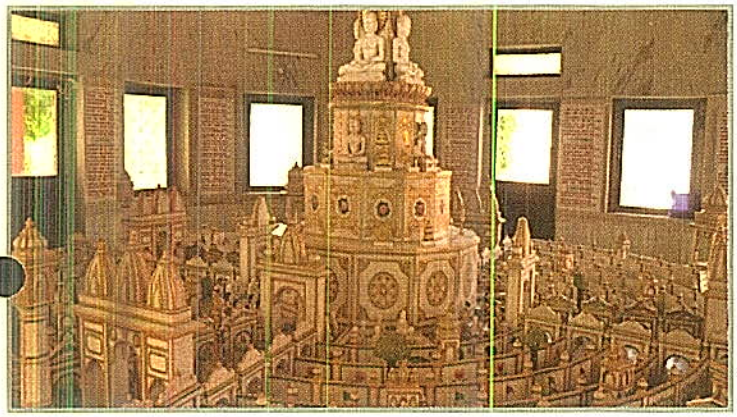

(समवशरण के अन्दर का दृश्य)

लीया। यह चतुर्थकालिन जिनबिम्ब है। चन्द्रप्रभू भगवान के स्थान को चन्द्रप्रभू बाड़ा कहा जाता था। जिससे इस क्षेत्र का नाम चांदखेड़ी हो गया। जब से मुनी सुधासागर ने इन प्रतिमाओ को निकाला तब से इस क्षेत्र का नाम पुरे भारतवर्श मे प्रसिद्व हो गया। भगवान के दर्शन हेतु यात्रियो की संख्या मे कई गुना इजाफा हो गया एवं क्षेत्र का विकास वर्श दर वर्श बढ़ता ही जा रहा है।

धार्मिक क्षेत्र के अलावा मंदिर प्रबंधन ने संतसुधासागर पब्लिक स्कूल की स्थापना किया। जिसमे प्रथम वर्श मे लगभग 300 छात्रो ने प्रवेश लेकर स्कूल का महत्व रोशन किया हे।

यह अतिशय क्षेत्र है। जहाँ पर हमेशा अतिशय होते रहते है। जो भी अपनी मनोकामना लेकर आता हैं उसकी मनोकामना पूर्ण होती है। प्रतिवर्श यहाँ 31 दिसम्बर को हजारो की संख्या मे लोग अपना नववर्श शुभ करने आते हे। यहा प्रतिवर्श आदिनाथ जयंति पर दो दिवसीय मेले का आयोजन किया जाता हे।

क्षेत्र की जानकारी हेतु फोन नं. (07430) –261358, 261616

हमारा धर्म कथनी प्रधान नहीं, करनी प्रधान है।

लोकतंत्र की हवा में जैन धर्म का ह्रास

-डॉ. नरेन्द्र कुमार जैन, सनावद (म.प्र.)

भारतीय लोकतंत्र को सम्पूर्ण विश्व में अत्यंत आदर की दृष्टि से देखा जाता है। इस विशाल देश का शासन तंत्र लोकतांत्रिक (जनतंत्र) प्रणाली के अंतर्गत चलता है। वयस्क मतदाता अपने मताधिकार के माध्यम से जनप्रतिनिधि चुनकर विधायिका (लोकसभा, विधानसभा) का निर्माण करते हैं और विधायिका, कार्यपालिका (सरकार) बनाकर शासन चलाती है। जनता जिस पार्टी को सर्वाधिक जनप्रतिनिधियों का बहुमत देती है, वह राजनैतिक पार्टी या पार्टियों का गठबंधन सरकार बनाती है। ये बात अलग है कि कई जनप्रतिनिधियों के कारनामों के सामने मत देने वाले मतदाता असहाय नजर आते हैं क्योंकि वे उनके द्वारा चुने गये प्रतिनिधि के काले कारनामों, हिंसात्मक प्रवृत्ति को देखकर भी 5 वर्ष से पूर्व उसे वापस नहीं बुला सकते। शासन तंत्र के अंतर्गत तीसरा तंत्र न्याय पालिका (न्यायिक व्यवस्था)है जो संविधान की रक्षा तथा व्यक्ति के मौलिक अधिकारों की संरक्षक है। भारतीय लोकतांत्रिक राज्य की सुखद, स्वप्निल कल्पना स्वतंत्रता, समानता और विश्वबन्धुत्व की भावना है जिस पर सभी गर्व करते हैं। किसी भी जाति में जन्म लेने के उपरांत भी धार्मिक स्वतंत्रता के साथ विचाराभिव्यक्ति की भी लोगों को पूरी आजादी दी गई है। इस तरह की अनेक अच्छाईयों के कारण व्यक्ति लोकतंत्र की हवा में सांस लेते हुए कई मौलिक दृष्टिकोणों और सिद्धांतों को छोड़ने के लिए भी तत्पर हैं। जो जैनधर्म के जानकारों और चिंतकों के लिए अत्यन्त चिंता का विषय है। यदि ऋषि, मुनियों, साधु-संतों, पत्रकारों व समाजसेवियों के विचार इसी तरह समाज के समक्ष आते रहे तो जैन समाज का तो पतन होगा ही, जैन धर्म का ह्रास भी निश्चित है। ऐसा लगता है कि कुछ अवसरवादी लोगों ने इस क्षेत्र में कार्य करना भी आरंभ कर दिया है। इसलिए यहाँ जैनधर्म के मूल मार्ग की चर्चा करना जरूरी है।

जैनधर्म में मोक्ष प्राप्ति के लिए जिस मार्ग को बताया गया है वह है रत्नत्रय। इसके अंतर्गत सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक् चारित्र आते हैं। आचार्य उमास्वामी के तत्त्वार्थ सूत्र के प्रथम अध्याय के प्रथम सूत्र ''सम्यग्दर्शन-ज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः'' अर्थात् सम्यग्दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक्चारित्र मोक्ष का मार्ग है। जिस पर प्रत्येक मानव को चलना चाहिए। अन्य मार्गों पर चलना तो मात्र भटकाव है। कहा गया है- ''समकित बिन जीव जगत भटके।'' अर्थात् सम्यक्त्व के बिना यह जीव संसार में भटकता रहता है। जैन धर्म ग्रंथों में सम्यग्दर्शन की जो परिभाषायें दी गईं हैं उनके अनुसार जब निष्कर्ष निकालते हैं, तो हम सभी जान जाते हैं कि-

1. तत्त्वार्थ का श्रद्धान करना- (जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष; ये सात तत्त्व हैं)।

2. सच्चे देव, शास्त्र और गुरु का श्रद्धान करना।

3. अपना और पर का यथार्थ स्वरूप जानना।

4. निज स्वरूप का निश्चय करना।

ये कथन हमें यह बताते हैं कि धर्म में विशेषकर जैन धर्म में श्रद्धा गुण की महत्ता है। सात तत्त्व, आत्मा और देव, शास्त्र गुरु पर अटल श्रद्धान होना आवश्यक है। वीतराग, सर्वज्ञ और हितोपदेशी परमात्मा क्षुधातृषादि अठारह दोषों से रहित हैं उन पर हमें अटल, अकम्प, स्थिर आस्था रखनी है। अरहंत और सिद्ध हमारे लिए वंदनीय हैं उनमें अटल श्रद्धा जिनकी होती है वे सच्चे देव के प्रति श्रद्धानी हैं। यदि देव प्रसन्न हैं तो फिर हमें किस बात की श्रद्धा। पूज्य मुनिपुङ्गव सुधासागर जी महाराज ने कुगुरु-कुदेव, कुधर्म की चर्चा करते हुए एक लौकिक दृष्टान्त के माध्यम से बताया है कि यदि कोतवाल के पास सीधी पहुँच है तो सिपाही को मनाने और रिश्वत की क्या जरूरत? इसी तरह यदि सच्चे देव के दर्शन, पूजन और आराधना से ही सच्चे सुख की प्राप्ति हो जाये तो फिर वीतराग देवी को छोड़कर जो दूसरे देवों की पूजा कर रहे हैं। अरिहंत, सिद्धों को छोड़कर सभी को छोड़कर रागी देवताओं को पूज रहे हैं तंत्र,मंत्र की सम्मोहिनी विद्या में लोगों को उलझाकर कालसर्प दोष निवारण जैसे कार्य करा रहे हैं, उनसे समन्वय कैसा ? क्या सामाजिक एकता के नाम पर सच्चे देव, शा गुरु के श्रद्धान को नजरंदाज किया जा सकता है? कदापि नहीं। आज के जो विद्वान् वीतराग देव के साथ-साथ अन्य देवी-देवताओं के पूजन अर्चन की वकालत कर रहे हैं उन्हें वीतराग देव पर ही श्रद्धा रखना चाहिए तभी तो जैनी कहलाने के सच्चे अधिकारी बनेंगे। ऐसा तो धर्म में कदापि संभव नहीं है कि गंगा के पास गये तो गंगादास, यमुना के पास गये तो यमुनादास। वीतराग धर्म में आये तो अरहंत, सिद्ध मान्य, दूसरे धर्म के पास गये तो वे भी मान्य; चाहे वे वस्त्रधारी, शस्त्रधारी ही क्यों न हों। जो मुनिगण तंत्र, मंत्र रसायन आदि देकर भोले भाले श्रावकों का मन बहला रहे हैं वे महाकवि धनंजय का यह श्लोक (विषापहार स्तोत्र) क्यों नहीं बताते-

विषापहारं मणिमौषधानि, मन्त्रं समुद्दिश्य रसायनं च।
भ्राम्यन्त्यहो न त्वमिति स्मरन्ति पर्यायनामाणि तवैव तानि॥

अर्थात शरीर का विष उतारने के लिए लोग मणि, औषधि, मंत्र,

आदमी उच्चारण से नहीं, उच्च आचरण से श्रेष्ठ बनता है

तंत्र को ढूँढ़ने के लिए दौड़ते फिरते हैं उनको यह मालूम नहीं कि ये सब आपके ही दूसरे नाम हैं अर्थात् विष उतारने वाले सभी कुछ आप ही तो हैं। आचार्य मानतुंग की वीतराग देव पर भक्ति अटल थी वे 'भक्तामर स्तोत्र' में लिखते हैं-

आपादकण्ठमुरुशृंखल वेष्टिताङ्ग, गाढ़ं बृहन्निगडकोटिनिघृष्ट जङ्घा।
त्वन्नाममन्त्रमनिशंमनुजास्मरन्तः सद्यः स्वयं विगत बन्ध भया भवन्ति ॥46॥

अर्थात् कोई मनुष्य पैर से लेकर गर्दन तक जंजीरों में बँधा, जकड़ा, बन्दीगृह में पड़ा हो, कठोर लोहे की बेड़ियों से उस अधीर की जाँघें छिल गई हों किन्तु यदि वह आपके पवित्र नाम का हृदय से स्मरण करे तो उसके समस्त बन्धन क्षणभर में स्वयं ही टूटकर गिर जाते हैं। इस तरह उन्होंने 'भक्तामर स्तोत्र' में मात्र वीतराग जिनेन्द्र देव का ही संकट के समय में पवित्र मन से स्मरण किया और फल भी सकारात्मक मिला। कहने का तात्पर्य है कि वीतराग देव की वंदना से सब कष्ट दूर होते हैं और आत्महित की सभी मनोकामनायें पूरी होती हैं। वैदिक संस्कृति में सरागी देवी देवताओं की पूजा अर्चना, अनुष्ठानादि का विधान है। जैनधर्म वीतरागी देव, शास्त्र और गुरु के प्रति श्रद्धा के अलावा किसी देवी देवता को उपासना की दृष्टि से महत्त्व नहीं देता। जैनधर्म में अरहन्त, सिद्ध आचार्य, उपाध्याय, साधु, जिन मन्दिर, जिन धर्म, जिनागम और जिन प्रतिमा; ये नव देवता माने गये हैं। आचार्य वसुनन्दि नें लिखा है-

किं जंपिएण बहुणा तीसु विलोएसु किं पि जं सोक्खं।
पूजाफलेण सव्वं पाविज्जइ णत्थि संदेहो ॥

अर्थात् अधिक क्या कहें ? तीनों लोकों में जो भी सुख है वह सब जिनेन्द्र पूजन के फल से ही प्राप्त होता है इसमें कोई संदेह का अवकाश नहीं है। इसी प्रकार हम प्रतिदिन पढ़ते हैं-

पश्यति जिनं भक्त्या पूजयन्ति स्तुवन्ति ये।
ते दृश्याश्च पूज्याश्च स्तुत्याश्च भुवनत्रये ॥

अर्थात् जो जिनेन्द्र देव का भक्तिपूर्वक दर्शन, पूजा एवं स्तुति आदि करते हैं वे तीनों लोकों में दर्शनीय, पूजनीय एवं स्तुत्य हो जाते हैं। वीतरागता तो जैनत्व तथा जैन धर्म का प्राण है। वीतरागता, नग्नत्व, नासाग्रदृष्टि, अपरिग्रह दिगम्बर मूर्तियों की पहचान है अतः इसी मार्ग का प्रचार-प्रसार यदि दिगम्बर मुनिराज करेंगे तभी ठीक रहेगा। समाज की दृष्टि से एकता जरूरी है परन्तु धर्म के मूल सिद्धान्तों के साथ यह एकता होना चाहिए। अपनी अपनी ढपली, अपना अपना राग अलापने वालों के साथ सिर्फ एकता के नाम पर समझौता या एकता ठीक नहीं।

लोकतंत्र में विधायिका है। हमारी विधायिका 'जिनवाणी' है। कार्यपालिका धार्मिक संस्थायें हैं और न्यायपालिका पूज्य आचार्य हो सकते हैं। जिनवाणी की व्यवस्था में देव (वीतराग) शास्त्र (जिनवाणी), और गुरु (दिगम्बर) की पूजा अर्चना का विधान है। वीतराग देव की जिनवाणी की और गुरुओं की वाणी मान्य होना चाहिए। लेकिन आज जिनवाणी एकांतवादी और अनेकांतवादी होकर छप रही है। प्रवचनों में भोगवादी, राग से भरे प्रवचनों को आधार बनाया जा रहा है। पत्र-पत्रिकाओं में धार्मिक सिद्धान्तों में प्राचीन ग्रन्थों के उद्धरण, गाथाएं, श्लोक नदारद हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के नाम पर व्यक्ति अपनी वाणी और प्रवचन छाप रहे हैं चाहे वे धर्म सम्मत हों या धर्म के विपरीत। एक मासिक पत्रिका ने तो एक बार 'होली' को एक महान् जैन आध्यात्मिक पर्व अपने सम्पादकीय में छाप दिया। एक ने अण्डे से कुछ सामग्री बनाने की विधि छाप डाली। मुनियों का मौन भी उनकी कमजोरी उजागर कर रहा है। मुनियों को धर्म की न्याय पूर्वक रक्षा करनी चाहिए। कई मुनि तो सम्यग्दर्शन का प्रसंग ही नहीं छेड़ते। इसी का परिणाम है कि जैन समाज के कई व्यक्ति आज अरहंत, सिद्ध के साथ-साथ रागी सरागी देवी-देवताओं की पूजा कर रहे हैं। जब मुनि ही वीतराग देव की पूजा के स्थान पर दूसरे देवों-देवी देवताओं की पूजा का उपदेश देंगे तो न्याय की कहाँ उम्मीद की जायेगी ? आज तो सर्वाधिक प्रभाव वाले आचार्य संघ एवं अन्य साधुओं को बदनाम करने का विधिवत् कुचक्र किया जा रहा है और समाज असहाय नजर आ रही है। नये तीर्थों पर ज्यादा ध्यान है, पुराने तीर्थ उपेक्षित हैं। यहाँ तक कि तीर्थों को भी अपनी स्वार्थपूर्ति का साधन बनाया जा रहा है। पत्र-पत्रिकायें जिन पर समाज के, धर्म के विकास की जिम्मेदारी है वे आर्थिक रूप से कमजोर हैं। अतः जैन धर्म निरन्तर ह्रास की ओर चला जाये तो कोई आश्चर्य नहीं है। जैन धर्म के कई अनुयायी आज नियमित रात्रि भोजन, शराब, कभी-कभी देवदर्शन तथा धड़ल्ले अनछना पानी पी रहे हैं। रात्रि में पार्टियाँ चल रहीं हैं, शराबी समाजसेवी तथा मुनि भक्त कहला रहे हैं। यदि संस्थाओं पर कब्जा करना हो तो शराब पीने वाले को भी सदस्य बनाया जाता है। जैन समाज स्वयं विचार करे कि जैनधर्म का यह ह्रास नहीं है तो और क्या है ?

लोकतांत्रिक प्रक्रिया का हम सम्मान करते हैं। सभी का साथ लेकर चलना भी आवश्यक है क्योंकि कहा जाता है कि कलयुग में संगठन ही शक्ति है। अतः सभी जैनधर्मी साथ-साथ उठें, बैठें और उनमें समन्वय कायम रहे; यह अच्छी बात है परन्तु विवादास्पद मुद्दों में सत्य और न्याय को ही सर्वोपरि मानकर सम्यग्दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक्चारित्र रूप रत्नत्रय के यथार्थ मार्ग का भी संरक्षण किया जाये। साधुओं, विद्वानों, समाजसेवियों, कार्यकर्त्ताओं, पत्रकारों को यह ध्यान रखना चाहिए कि लोकतंत्र की हवा में जैनधर्म का ह्रास न हो।

Anger burns the nature of man just like fire burns things.

कब चेतेगी जैनसमाज ? क्या कर रही हैं जैन संस्थाएं ?

– कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती'

जैन समाज प्रबुद्ध समाज है, ऐसा सभी मानते हैं। वर्तमान लोकतन्त्र में प्रबुद्ध समाज अपनी न्यायोचित अपेक्षाओं को भी पूरा नहीं कर पाता। इसके प्रमुख कारण हैं–

1. हम सड़कों पर आन्दोलन नहीं कर सकते।
2. हमारे पास बड़ी वोट शक्ति नहीं है।
3. हम हिंसा नहीं कर सकते।
4. कानूनी प्रक्रिया बहुत लम्बी, श्रम साध्य एवं धनसाध्य है।
5. हमारी संसद एवं विधानमण्डलों में उपस्थिति नगण्य है।
6. हमारे समाज के प्रति बहुसंख्यक समाज की सद्भावना सहयोग नहीं है विशेष रूप से धर्म और तीर्थों के बारे में।
7. हम भी मान बैठे हैं कि हमारी समस्याएं कोई और हल करेगा।

अब ऐसे में हमारी समस्याएं हल नहीं हो सकतीं। हमें स्वयं चेतना होगा, अपने समाज में गांधी पैदा करना होगा, भगतसिंह पैदा करना होगा।

अब प्रश्न है कि हमारी समस्याएं क्या हैं? तो हमारी समस्याएं हैं–

1. मूल तीर्थों की रक्षा, अतिक्रमण से बचाव कैसे हो ?
2. श्रमण मुनियों की सुरक्षा, निर्बाध विहार में अवरोध।
3. राजनैतिक भागीदारी न मिलना।
4. जैनधर्म–दर्शन एवं प्राकृत–अपभ्रंश भाषा के अध्ययन/अध्यापन की विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में समुचित व्यवस्था न होना।
5. सरकारी पुस्तकालयों में जैन साहित्य एवं पत्र–पत्रिकाओं का क्रय न होना।
6. जैन कानून को मान्यता नहीं देना।
7. जैन पर्वों की राज्यपक्ष द्वारा उपेक्षा।
8. जैन मान्यताओं के विरुद्ध आचरण/हिंसक व्यवहार।
9. अल्पसंख्यक स्वरूप के बाद भी सुविधा न मिलना।
10. जैनमूर्तियों एवं सम्पदाओं की चोरी।

इन समस्याओं का हमें समाधान चाहिए। दोषी हम भी हैं और हमारा समाज भी; जिसने सुविधाजनक प्राथमिकताएं बनायी हैं और समस्याओं की अनदेखी की है। राज–सत्ता तो हमसे विमुख है ही; उसे प्रभावित करने का कार्य हमने किया ही नहीं है। हम तो उन्हें अपने कार्यक्रमों में बुलवाकर उन्हें पुष्पहारों से लादने, मँहगे उपहार/प्रतीक चिन्ह देने और उनके अनर्गल या चाटुकारिता भरे भाषण सुनने और गर्दनें फँसा–फँसाकर फोटो खिंचवाने में व्यस्त हैं। कहने को तो हमारे यहाँ भारतवर्षीय दि. जैन धर्मसंरक्षिणी महासभा..... तीर्थसंरक्षि .. महासभा..... श्रुतसंरक्षिणी महासभा, युवा महासभा..... दिगम्बर जैन महासमिति–1, महासमिति–2, जैनमिलन, दक्षिण भारत जैन सभा, भारतवर्षीय दि. जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, कहान दि. जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, खण्डेलवाल महासभा, गोलापूर्व महासभा, अग्रवाल जैन महासभा, परवार सभा, अ.भा.दि. जैन विद्वत्परिषद्, अ.भा. दि. जैन शास्त्रि परिषद्, जैन संस्कृति संरक्षण मंच, समन्वय समिति, उत्तरांचल दि. जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, बंगाल–बिहार–उड़ीसा तीर्थक्षेत्र कमेटी, कर्नाटक जैनसभा, पूर्वांचल जैन समाज, युवा परिषद् और स्थानीय गांव–शहर स्तर पर सैकड़ों–हजारों संगठन हैं सबके अपने–अपने निर्वाचित/स्वयम्भू सभापति/अध्यक्ष, मन्त्री, कोषाध्यक्ष आदि हैं किन्तु मेरे मन में प्रश्न उठता है कि इतनी संस्थाओं ने गिरनार, सम्मेदशिखर, बद्रीनाथ, ऋषभदेव केशरिया जी, खण्डगिरि–उदयगिरि, सिरपुर आदि के लिए क्या किया ? ज्यों ही कोई तीर्थयात्री गिरनार जी की वंदना के लिए जाता है तो सबसे पहले बंडीलाल कारखाना (धर्मशाला) और निर्मल ध्यान केन्द्र के कर्मचारियों के द्वारा हिदायत दी जाती है कि पर्वत (पांचवीं टोंक–तीर्थंकर भगवान् नेमिनाथ की निर्वाण भूमि) पर जाओ तो दो बातें याद रखना–

1. तीर्थंकर श्री नेमिनाथ की जय नहीं बोलना।
2. चावल, अष्टद्रव्य नहीं चढ़ाना।

तीर्थयात्री का यह सुनते ही दिमाग खराब हो जाता है कि वह तो बड़ी साध लिये वंदना करने आया

दर्शन ज्ञान और चारित्रवान सभी जिनेश्वर भावतीर्थ हैं (मूलाचार, गा.562)

था; यह क्या कहा जा रहा है? फिर भी वह बड़ी मेहनत से एक–एक पाँव सीढ़ियों पर जमाता हुआ 10 हजार सीढ़ियां चढ़ता है और बड़ी आशा भरी नजरों से पाँचवी टोंक को निहारता है। वहाँ पुलिस है किन्तु हमारी सुरक्षा के लिए नहीं है। हिन्दू–बाबाओं ने हमारे तीर्थंकर नेमिनाथ के चरण चिन्हों को लेप चढ़ाकर उनका मूलरूप विकृत किया हुआ है, ऊपर से दो तिहाई भाग को फूलों से ढँक रखा है, वे बाबा जैनों को खा जाने वाली आँखों से देखते हैं, 10 सेकण्ड भी रुकने नहीं देते और धमकाते हुए कहते हैं– चलो, आगे चलो, नहीं तो नीचे खाई में फेंक देंगे, मरना है क्या? यहाँ कोई नेमिनाथ नहीं हैं। इस तरह की बातें करते हैं। मुनियों तक से अभद्र व्यवहार करते हैं। मुनिश्री प्रबलसागर जी महाराज पर किया गया प्राणघातक हमला किसे याद नहीं है ? किन्तु अब कोई दोषियों पर कार्यवाही की बात नहीं करता; आखिर क्यों? जिन संस्थाओं के पास आर्थिक सबलता / सामर्थ्य है; वे भी चुप हैं। सरकार तो चुप होगी ही। अब वे संस्थाएं कहाँ हैं जो गिरनार पर विजय, गिरनार समस्या सुलझी जैसे प्रकाशन कर अपनी पीठ खुद ही थप–थपा रही थीं ? आचार्य श्री निर्मलसागर जी महाराज के शिष्य उपाध्याय श्री नयनसागर जी महाराज प्रतिवर्ष प्रेरणा देकर हजारों तीर्थ यात्रियों को गिरनार तीर्थ की वंदना हेतु भेजते हैं। यह प्रशंसनीय कार्य है। ऐसे आयोजनों को मीडिया कवरेज देना चाहिए। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी गिरनार समस्या से अच्छी तरह परिचित हैं किन्तु वे भी उसे सुलझाना नहीं चाहते। यदि जैनसमाज एक लोक सभा चुनाव में सर्वसम्मत रूप से यह निर्णय ले ले कि हम वोट उसी को देंगे जो गिरनार पर जैनसमाज के दर्शन पूजन का अधिकार सुनिश्चित करेगा; तो राष्ट्रीय पार्टियां और उनके नेता इस समस्या के समाधान हेतु आगे आयेंगे।

क्यों नहीं यह संस्थाएं एक मत होकर वे सभी संभव तरीके अपनाती हैं; जिनसे गिरनार समस्या का हल निकले ? मुझे ऐसा लगता है कि यदि जैन समाज राष्ट्रीय स्तर पर एक जुट होकर दिल्ली, अहमदाबाद और गिरनार में स्थायी रूप से क्रमिक धरना दे तो गुजरात एवं केन्द्र सरकार तथा न्यायालय भी समुचित समाधान निकालने के लिए विवश होंगे। भले ही इस कार्य में एक–दो नहीं बल्कि दस–पाँच वर्ष भी लगें तो यह कार्य करना चाहिए। क्या हम प्रतिदिन के हिसाब से 63 लोग इकट्ठे नहीं कर सकते ? हमारा विरोध किसी धर्म या समाज से नहीं है बल्कि हमें तो अपना स्वाभाविक पूजा का अधिकार चाहिए। क्या एक लोकतंत्रात्मक राष्ट्र में यह भी संभव नहीं है ? अगर देश में रामलला और काशी विश्वनाथ तथा हजरतबल की रक्षा के लिए सरकार करोड़ों रुपये प्रतिवर्ष खर्च कर सकती है तो गिरनार पर्वत की पाँचवीं टोंक को तथाकथित बाबाओं से मुक्त क्यों नहीं कर सकती? हमने यह तो कभी नहीं कहा कि वहाँ हमारे अलावा और कोई दर्शन न करे। जब भारतीय कानून धर्म और धर्मायतनों के मामले में 15 अगस्त, 1947 की यथास्थिति को स्वीकार करता है तो जैनधर्मायतन इस कानून की परिधि में क्यों नहीं आते ?

आज हमारी जैन संस्थाओं के पास अपनी समस्याओं के समाधान के लिए कोई एजेण्डा नहीं है; ऐसा क्यों ? अभी हस्तिनापुर में भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन हुआ वहाँ मूर्तियों की प्रशस्ति में 'कुन्दकुन्द आम्नाय' के स्थान पर 'पुष्पदन्त–भूतबलि आम्नाय' लिखवाया गया। यह पहली बार हुआ है। लेकिन क्यों हुआ ? इस का उत्तर कौन देगा? इसके पहले भी एक आचार्य और उनके शिष्यों ने मंगलाचरण में 'कुन्दकुन्दाद्यो' के स्थान पर 'पुष्पदन्ताद्यो' का उपयोग करना प्रारंभ कर दिया। समाज के चन्द सम्पादकों, विद्वानों ने विरोध भी किया किन्तु तथाकथित देव–शास्त्र–गुरु की संरक्षक धर्म संरक्षिणी सभायें मौन रहीं, इसी का खामियाजा समाज को इस रूप में भुगतना पड़ रहा है कि आज विश्व प्रसिद्ध जैनधर्म की महान् कुन्दकुन्द आम्नाय को विलोपित कर 'पुष्पदन्त–भूतबलि आम्नाय' प्रारंभ की जा रही है। जहाँ कुन्दकुन्द आम्नाय लगभग दो हजार वर्ष से अधिक पुरानी है वहीं 'पुष्पदन्त–भूतबलि आम्नाय' का उद्भव सन् 1915 से माना जायेगा। इतिहास की चिन्ता किसे है ? इसी तरह बिना तीन हजार वर्ष पूरे हुए तीर्थंकर पार्श्वनाथ का त्रिसहस्राब्दि समारोह मना लिया गया। उस समय भी ये संस्थाएं मौन रहीं। जिन लोगों ने विरोध भी किया उनके विरोध को अनसुना कर दिया गया। आज समाज में संस्थाओं का नेतृत्व ऐसे लोगों को रास आ रहा है जो जैनधर्म से अनभिज्ञ हैं और अपने सम्मान की खातिर जैनधर्म के सम्मान से

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।

समझौता करने के लिए तैयार रहते हैं। ऐसे लोगों से संस्थाओं को बचाना आज जैन समाज की पहली आवश्यकता है।

अभी ईस्वी सन् 2016 के प्रारंभ दिन कुछ जैन साधुओं ने रात्रि में 12बजे अपनी उपस्थिति दर्ज करायी और श्रावकों को आशीर्वाद दिया। भारतीय हिन्दू एवं जैन परम्परा में तिथियों का प्रारंभ सूर्योदय से माना जाता है फिर रात्रि में अपने अहिंसा व्रत एवं ईर्यापथ शुद्धि का उल्लंघन कर समारोह में भीड़ का हिस्सा बनना कहाँ तक उचित है ? दिल्ली में एक उपनगर में लगभग 5 करोड़ रुपये व्यय कर तथाकथित नए वर्ष का उत्सव आयोजित किया गया जिसमें गाँव वालों को खदेड़ने के लिए पुलिस को बल प्रयोग तक करना पड़ा। लाखों रुपये के पुरस्कार बांटे गये ? क्या यह जन– धन हानि नहीं है ? यह कौन सी धर्मप्रभावना है ? हमारे साधु अपना स्तर क्यों गिरा रहे हैं ? उन्हें अपनी जगत् पूज्य छवि को बनाए रखना चाहिए। उन्हें व्यक्ति विरोधी वक्तव्य देने से भी बचना चाहिए।

गिरनार तीर्थ क्षेत्र की तरह सम्मेदशिखर जी तीर्थक्षेत्र के अस्तित्व को लेकर समय–समय पर सोशल मीडिया पर जैनों द्वारा ही अनावश्यक आक्षेपात्मक कथनों का प्रचार किया जाता है यह उचित नहीं है। अकेले बाबूलाल मरांडी जैसे लोग जैनों से सम्मेदशिखर नहीं छीन सकते। किन्तु यह भी ध्यान रखें कि जो लोग या संगठन हजारों लोगों को एक साथ सम्मेदशिखर जी की वंदना के लिए ले जाकर पुण्य कमाना चाहते हैं वे यह भी तो सोचें कि वहाँ आवास एवं भोजनादि की व्यवस्था समुचित चले। वहाँ के प्राकृतिक वातावरण पर भी विपरीत प्रभाव न पड़े। हमें अपने तीर्थों को सुरक्षित भी रखना है, स्थानीय लोगों से सद्भाव भी बनाकर रखना है और यह भी ध्यान रखना है कि कहीं हमारे ही धन से हमारे ही विरोधी तो नहीं पनप रहे हैं या हमारे ही विरोध में वातावरण तो नहीं बन रहा है। **भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के प्रभाव से श्री पंकज जैन, दिल्ली के द्वारा डाक बंगले पर की गयी निःशुल्क भोजन व्यवस्था एक प्रशंसनीय कार्य है; साथ ही तीर्थक्षेत्र कमेटी के द्वारा शाश्वत ट्रस्ट का संचालन भी प्रशंसनीय है। ऐसे उपक्रम और भी स्थापित किये जाने चाहिए। जैन समाज की संस्थाओं को जैनतीर्थों पर अपनी परिवहन व्यवस्था बनाना चाहिए। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की तो विचारधारा स्पष्ट है कि–**

चलना हो जिन्हें वे चलें मेरे साथ।
पीछे मुड़कर देखूंगा नहीं, हार मानूंगा नहीं।।

आजकल मोबाइल एवं वाट्सएप का जमाना है। इसका उपयोग हमें अपने धर्म के प्रचार प्रसार में करना चाहिए किन्तु हो यह रहा है कि हम वे मुद्दे लोगों दे रहे हैं जिनसे जैनत्व की हानि होती है। कुछ लोगों का आशंकित होकर यह कहना कि यदि साधुओं के विहार पर रोक लगा दी तो क्या होगा ? यदि पिच्छि पर प्रतिबंध लगा दिया तो क्या होगा ? यदि साधुओं को खुले में शौच जाने की अनुमति नहीं दी तो क्या होगा ? यदि नग्नता पर प्रतिबंध लग गया तो क्या होगा ? यह काल्पनिक प्रश्न हैं इनसे फिलहाल व्यथित होने की आवश्यकता नहीं है। अतः इन मुद्दों पर चर्चा ही न करें तो बेहतर होगा। अपने धर्म को और अधिक व्यापक एवं सामाजिक बनाने की आवश्यकता है।

कुछ संस्थाओं ने समन्वय समिति बना रखी है जिनके स्थायी हस्ताक्षरकर्ता हैं। विगत ढाई वर्षों इस समिति ने तीर्थक्षेत्र कमेटी के वर्तमान पदाधिकारियों से दूरी बनाकर रखी है; यह कैसा समन्वय है ? यदि कोई मतभिन्नता भी है तो मिल बैठकर समाधान निकालना चाहिए था। देखने में यह भी आ रहा है कि समन्वय समिति कहीं पर तीर कहीं पर निशाना की तर्ज पर चल रही है। उसने आज तक यह नहीं कहा या कोई ऐसा निर्णय नहीं लिया जिससे जैनधर्म के विरोध में कार्य करने वालों को अपने विचारों में परिवर्तन के लिए बाध्य होना पड़ता। **आज सभी जानते हैं कि जैनसमाज में एक साधु विशेष की प्रेरणा से 'जैनम् जयतु शासनम्' की उपेक्षा कर 'नमोस्तु शासन जयवंत हो' के नारे लगाये जा रहे हैं। मूलाचार में इसका उल्लेख नहीं होने पर भी ऐसा ही प्रचारित किया जा रहा है कि नमोस्तु शासन का उल्लेख मूलाचार में आया है। अभी मांगीतुंगी में विराजमान गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माता जी ने स्पष्ट कहा है कि जैनम् जयतु शासनम् ही ठीक है, नमोस्तु शासन नहीं। इसके पूर्व भी वे सम्यज्ञान पत्रिका में यह लिखवा चुकी हैं, विद्वानों से चर्चा में भी उन्होंने जैनम् जयतु शासनम् को ही उपयुक्त माना है जिसका प्रकाशन पार्श्व ज्योति, सम्मेदाचल आदि पत्र–पत्रिकाओं में किया गया था।** अभी विद्वानों के एक

विशिष्ट समूह ने भी समाज से निवेदन किया है कि वे नमोस्तु शासन का उपयोग बंद करें तथा जैनम् जयतु शासनम् का ही उद्घोष करें। क्या पांच संस्थाओं की समन्वय समिति जैनधर्म हित में ऐसा ही निर्णय नहीं ले सकती ? आखिर क्यों इन संस्थाओं के प्रमुख पदाधिकारी स्वयं ऐसे आयोजनों में सम्मिलित होकर तालियां बजाते हैं जहाँ नमोस्तु शासन जयवंत हो के नारे लगते हैं। **नमोस्तु शासन संघ का क्या औचित्य है ? क्या जैनशासन संघ पर्याप्त नहीं है ? हम छोटी सी भूल को स्वीकार कर लेते हैं और बाद में पता चलता है कि हमारा समाज का एक वर्ग हम से टूट गया। आज ईसाई और मुस्लिम बढ़ रहे हैं और जैन, हिन्दू घट रहे हैं; यह विचारणीय है।** इसका एक ही कारण है कि हमने अपने ही लोगों पर अंकुश नहीं लगा पाया। परिणाम यह निकला कि–**लम्हों ने खता की और सदियों ने सजा पायी।**

आज पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सवों में जिस तरह धन का अपव्यय किया जा रहा है वह भी चिन्ता का विषय है। एक युवती ने एक जैन चैनल पर निरंतर धन की मांग के विज्ञापनों को सुनकर कहा कि जितना पैसा इन पत्थरों पर खर्च किया जा रहा है उतना ही हमारा समाज कमजोर हो रहा है। क्योंकि यदि यही पैसा समाज के कमजोर वर्ग पर खर्च किया जाता तो वे सशक्त बनते, उच्च शिक्षा ग्रहण करते, रोजगार योग्य बनते और समाज की रक्षा करते। मुझे उस युवती की बात बहुत मार्मिक एवं सही प्रतीत हुई। आज जैन समाज आत्म–मुग्ध होकर भले ही कहे कि हम सम्पन्न हैं लेकिन ऐसा कहने वालों ने लगता है समाज के दूर कोनों को अच्छी तरह नहीं देखा है जिन्हें हमारे सहयोग की दरकार है। हमें शिकायत तो कुछ इस तरह है कि–

मंजिल मिल ही जायेगी, भटकते हुए ही सही।
गुमराह तो वे हैं जो घर से निकलते ही नहीं।।

हो सकता है मेरे उक्त विचार कुछ लोगों को कचोटे किन्तु मैं भी यह चाहता हूं कि लोग भले ही मुझे बुरा कहें किन्तु बुराई को मिटाने के लिए तो आगे आयें। मेरी तो स्थिति यह है कि–

मुफलिसी में मैंने किसी का कसीदा लिखा नहीं।
कीमत तो मिल रही थी लेकिन मैं बिका नहीं ।।

मेरे विचारों पर जो व्यक्ति विचार व्यक्त करना चाहें उनका स्वागत है।

साहित्य-समीक्षा

समीक्ष्य कृति- **जैन दिगम्बराचार्य : प्रेरक संत एवं सद्विचार**
संकलनकर्ता/लेखक- डॉ. आर.के.जैन, कोटा (राजस्थान)
सम्पादक - पं. सुदेश जैन 'कोठिया' व डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती'
प्रकाशक - श्री सकल दिगम्बर जैन समाज समिति (रजि.),कोटा
प्राप्ति स्थान- आर.के. प्रकाशन, कोटा जं., कोटा (राज.)
मूल्य- 250/- पृ. संख्या- 170

समीक्ष्य कृति में संकलनकर्ता डॉ. आर.के.जैन,कोटा ने अपनी प्रतिभा एवं पुरुषार्थ से जैन दिगम्बराचार्यों एवं प्रेरक संतों का परिचय एवं महत्त्वपूर्ण सद्विचारों का संकलन कर प्रकाशित किया। यह एक महत्त्वपूर्ण कार्य है जिसका सम्पूर्ण समाज द्वारा समादर किया जायेगा; ऐसा मेरा विश्वास है। बीसवीं एवं इक्कीसवी शताब्दी में आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज, आचार्य श्री आदिसागर जी महाराज एवं आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज छाणी की परम्परायें चलीं जिनमें अनेक आचार्य एवं मुनि, आर्यिका आदि संत हुए। वर्तमान में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज, आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज, आचार्य श्री निर्मलसागर जी महाराज, मुनिपुङ्गव श्री सुधासागर जी महाराज, आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज, आर्यिका ज्ञानमती माता जी आदि जिनधर्म की अतिशय प्रभावना कर रहे हैं। इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होने की समाज की आकांक्षा रहती है। इसी की पूर्ति यह कृति करती है भविष्य में शेष बचे साधुओं का परिचय भविष्य में और प्रकाशित होना चाहिए। प्रस्तुत कृति के संकलन के लिए डॉ. आर.के. जैन, कोटा एवं सम्पादक द्वय व प्रकाशक साधुवाद के पात्र हैं।

-डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन सनावद (म.प्र.)

णिग्गंथ वीयराया जिणमग्गे एरिसा पडिया। अर्थ- जिन प्रतिमा निर्ग्रन्थ, वीतराग होती है (बोधपाहुड़, गा.10)

परम पूज्य मुनि श्री समतासागरजी एवं परम पूज्य मुनि श्री अरहसागरजी की गिरनार वंदना आचार्य श्री निर्मलसागरजी के सान्निध्य में

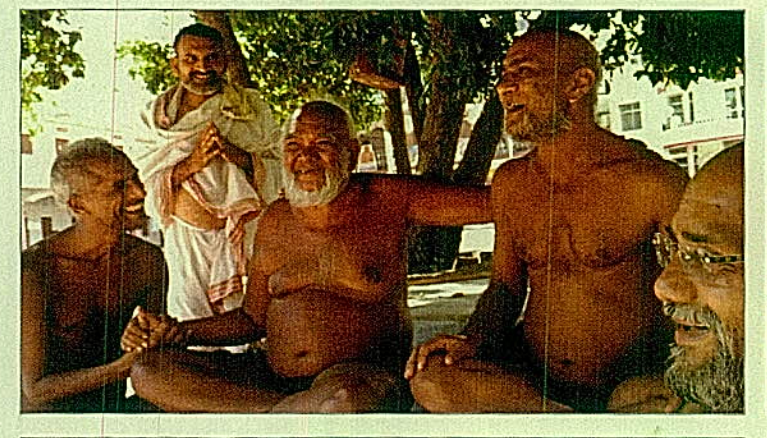

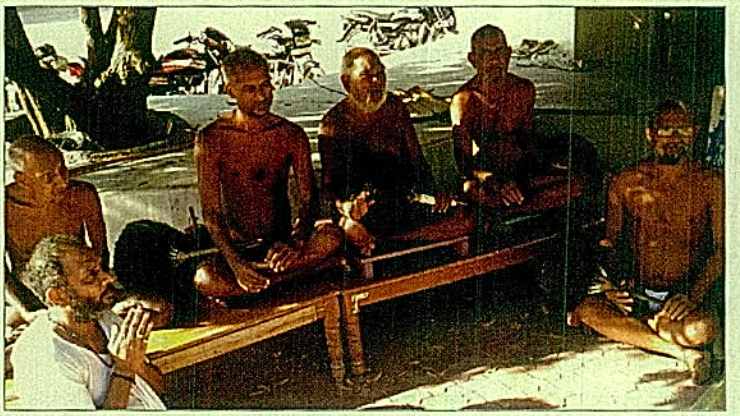

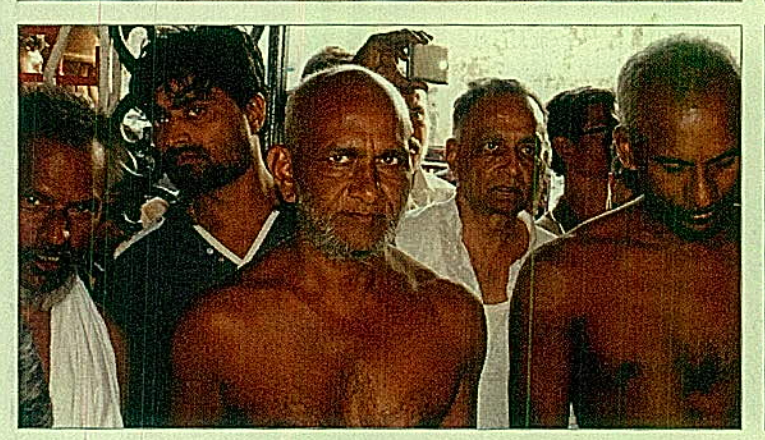

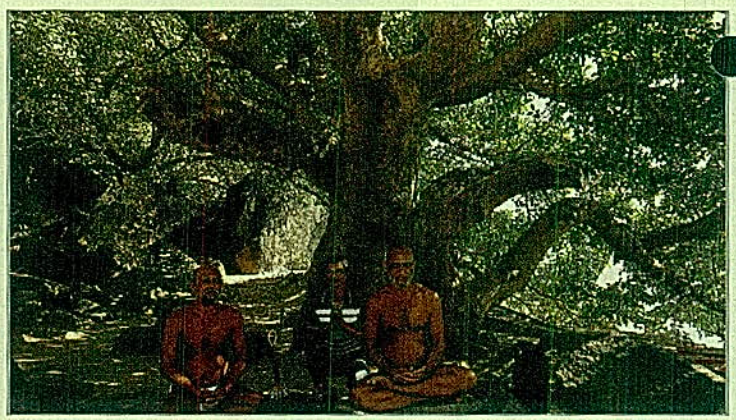

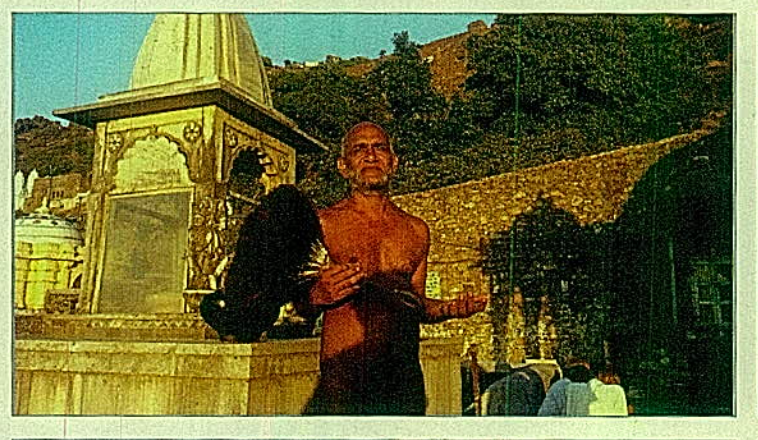

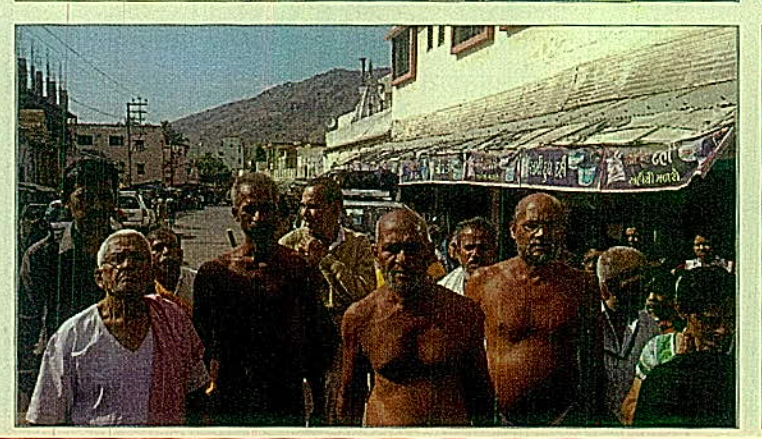

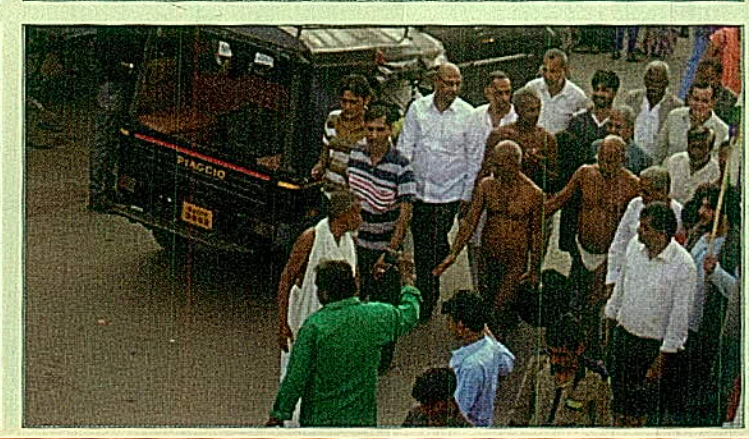

यूं ही हम दिल को साफ रखा करते थे, पता नहीं था कि कीमत-चेहरों की होती है

श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ तपोदय तीर्थक्षेत्र कमेटी बिजौलियां

- नरेन्द्र जैन पत्रकार, बिजौलिया
मंत्री - श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ तपोदय तीर्थक्षेत्र कमेटी बिजौलियां

ऐतिहासिक नगर बिजौलिया खनिज बाहुल्य क्षेत्र होने से राजस्थान एवं मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध बड़े-बड़े शहरों से जुड़ा हुआ है। यहां तीन दर्शनीय जैन मंदिर स्थित हैं तथा दिगम्बर जैन समाज की जनसंख्या लगभग 800 है। नगर के समीप ही कई पर्यटन स्थल है। यहां बैंक, डाक, तार, टेलीफोन एवं चिकित्सा जैसी सभी जीवनोपयोगी सुविधाएं सहज सुलभ है।

बिजौलिया नगर पश्चिमी रेलवे की दिल्ली-मुंबई लाइन से मुख्य स्टेशन कोटा जंक्शन से 80 कि.मी. दूर कोटा-उदयपुर वाया बूंदी स्टेट हाईवे नं.9 पर स्थित है तथा कोटा से बिजौलिया वाया डाबी-बुधपुरा 75 कि.मी. का मार्ग है जो क्षेत्र की चार दीवारी के नजदीक से गुजरता है। यह मार्ग भी पक्का है। जिला मुख्यालय भीलवाड़ा से 85 कि.मी. उदयपुर से 225 कि.मी. चित्तौड़गढ़ से 110 कि.मी. दूरी पर स्थित है। कोटा-चित्तौड़गढ़-नीमच रेल मार्ग पर माण्डलगढ़ व उपरमाल स्टेशन से यातायात के साधन सुलभ हैं।

यहां एक प्राकृतिक चट्टानों पर दो शिलालेख उत्कीर्ण हैं। एक क्षेत्र परिसर में तथा दूसरा क्षेत्र परिसर के पूर्व में रेवती नदी के किनारे पर स्थित है, जो संभवतः विश्व का सबसे बड़ा शिलालेख है। 'उन्नत शिखर पुराण' नाम से स्थित इस शिलालेख में 292 श्लोक हैं।

क्षेत्र परिसर में स्थित शिलालेख के अनुसार क्षेत्र का संक्षिप्त इतिहास इस प्रकार है -

'एक बार दिगम्बर जैन धर्मावलंबी श्रेष्ठी लोलार्क यात्रा करते हुए यहां विद्यावली बिजौलिया आये, उनके साथ उनकी तीन पत्नियां क्रमशः ललिता, कमलश्री एवं लक्ष्मी भी थी। एक दिन अर्धरात्रि में शैय्या पर सोते हुए उन्होंने स्वप्न में एक दिव्य पुरुष को देखा, जब उन्होंने उसका परिचय एवं आगत स्थान पूछा तब वह दिव्य पुरुष बोला कि मैं धरणेन्द्र हूँ और पातालमूल से तुम्हें उपदेश देने आया हूं 'कि भगवान पार्श्वनाथ स्वयं यहां आयेंगे, शिलालेख श्लोक नं. 53 प्रातः उठने पर उसने सोचा कि स्वप्न तो वातादिविकारों से आ जाते हैं- यह विचार कर उपेक्षा कर दी। शिलालेख श्लोक नं. 54

दूसरे दिन लोलार्क की प्रथम पत्नी ललित को उसी दिव्य पुरुष ने स्वप्न दिया कि 'भद्रे सुनो! मैं धरणेन्द्र हूं और तुम्हें यहीं पर भगवान पार्श्वनाथ के दर्शन कराता हूं, शिलालेख नं.56 तब ललिता ने कहा- नागेन्द्र! नागेन्द्र! मेरे पति पार्श्वनाथ स्वामी को बाहर निकालेंगे, इसलिये यह बात उनसे कहिये, श्लोक नं. 57, धरणेन्द्र पुनः लोलार्क के पास गये तथा उससे कहने लगे- भद्र! भगवान पार्श्वनाथ रेवती के किनारे आ गये हैं, तुम उन्हें निकालो, धर्म का अर्जन करो, जिनालय बनाओ जिससे लक्ष्मी, वंश, यश, पुत्र, पौत्र, संतानसुख में वृद्धि होगी। यहां के भीम नामक वन में भगवान का वास है। तीनों लोकों के प्राणियों को ज्ञान देने वाले पार्श्वनाथ जिनेश्वर अब यहां वास करेंगे। श्लोक नं. 59

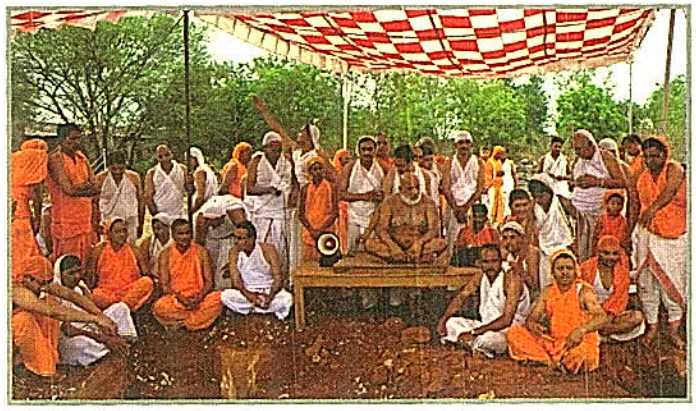

संतो हि हितभाषिणः (उत्तरपुराण, पर्व 70, श्लोक 325) । अर्थ- साधु-संत आत्महित का उपदेश देते हैं ।

पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बिजोलियां के दृश्य

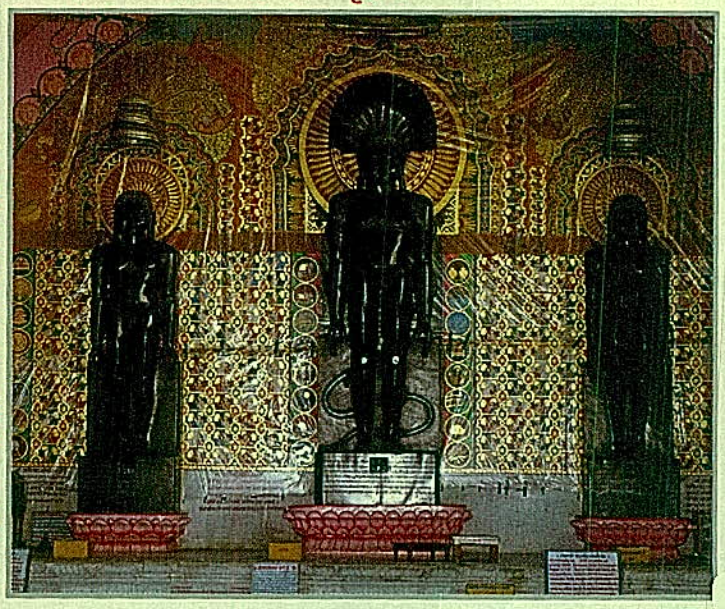

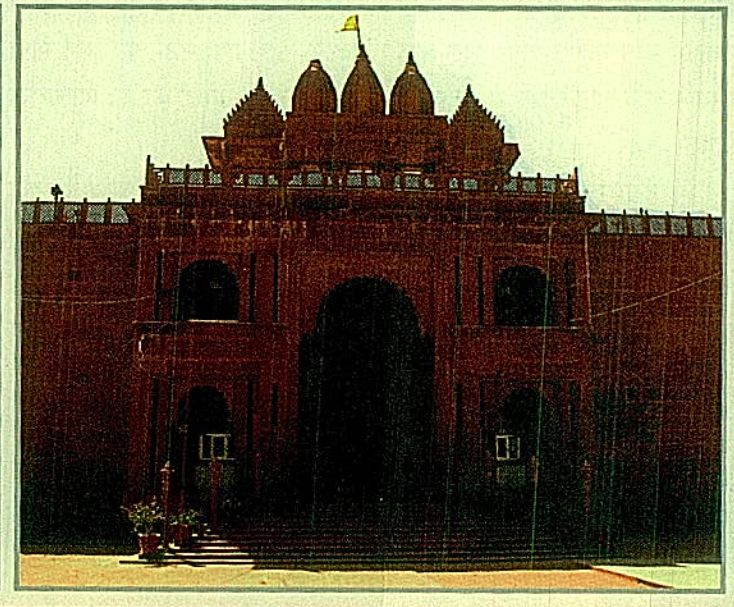

मनुष्य ने जो वस्तु छोड़ दी है, उससे पैदा होने वाले दुःख से उसने अपने को मुक्त कर लिया है (तिरुवल्लूर)

प्रातःकाल जागृत होने पर लोलार्क ने पुनः स्वप्न पर विचार किया। निर्दिष्ट स्थान पर पंच परमेष्ठी का ध्यान करके स्वयं ही खोदा त्योंही कुण्ड के समीप अकृत्रिम स्वयंभूत भामण्डल युक्त अत्यन्त शोभनीय पार्श्वनाथ की प्रतिमा के सहसा दर्शन किये। श्लोक नं.70

तब लोलार्क ने अपने गुरु श्री जिनचन्द्राचार्य से यहां पर पार्श्वनाथ स्वामी के विशाल जिनालय एवं तीर्थ की स्थाना करवाई। श्लोक नं.82

शिलालेख के अनुसार यह मंदिर सप्त आयतन युक्त बनाया गया। इस मंदिर की चौहद इस प्रकार है- पूर्व में रेवती नदी और देवपुर, दक्षिण में मठ स्थान, उत्तर में कुण्ड व दक्षिण पश्चिम में नाना वृक्षों से सुशोभित वाटिका, श्लोक नं.85

इस मंदिर की प्रतिष्ठा विक्रम सं.1226 फाल्गुन कृष्णा तृतीय, गुरुवार हस्त नक्षत्र वृतियोग ततिलकरण में हुई। श्लोक नं. 91-92 इस मंदिर के मुख्य शिल्पी का नाम सूत्रधार हरसिंह के पौत्र माल्हपा का पुत्र आहड़ था। श्लोक नं. 89

मंदिर के चारों कोणों पर गोल गुम्बज युक्त चार देवरियां विद्यमान हैं। मंदिर का गर्भगृह 7 फीट 2 इंच लम्बा, 7 फीट 1 इंच चौड़ा एवं 6 फीट ऊँचा बना हुआ है। वेदी के मध्य में एक शिखर कृति है, जिसमें ताकनुमा वेदी बनी हुई है जो रिक्त है। संकेत है कि प्राचीन समय में मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा यहां विराजमान रही होगी। लेकिन लगता है कि उक्त प्रतिमा को सुरक्षा की दृष्टि से मुस्लिम शासकों के समय में भूगर्भ में स्थापित कर दिया गया होगा। इस रिक्त स्थान पर एक कोने में छेद बना हुआ है जिसके द्वारा अभिषेक का जल भूगर्भ में जाता है तथा उसी छिद्र में सिक्का डालने पर कुछ समय तक खन्न-खन्न की आवाज आती है। शिखर पर चौबीसों तीर्थंकरों की मूर्तियां उत्कीर्ण है तथा मध्य में पार्श्वनाथ की मूर्ति है। मध्य मूर्ति के ऊपर तीन छत्र व गज लक्ष्मी है। छत्रों के ऊपर पद्मावती देवी हाथ जोड़े बैठी हैं। गजलक्ष्मी के दोनों कोनों पर देव फल माला लिये हुये खड़े हैं। शिखर में कुल 30 जिन प्रतिमाएं उत्कीर्ण हैं।

जिन मंदिर के सामने फर्श पर 'सोपानतना' शब्द अंकित है। विश्वास किया जाता है कि इस स्थान के नीचे भूगर्भ में जाने के लिए सोपान पथ; सीढ़िया बनी हुई है। यह विश्वास किया जाता है कि भूगर्भ गृह में वेदी की सभी प्राचीन मूर्तियां सुरक्षित विराजमान हैं।

क्षेत्र संग्रहालय में एक तरफ 6 देवी मूर्तियां रखी हुई हैं, जो रेवती कुण्ड से निकाली गई थीं जिनका उल्लेख शिलालेख में किया गया है। मंदिर के उत्तर-पश्चिम में रास्ते के निकट 5 फीट ऊँची धरणेन्द्र, मानभद्र जी की विशाल मूर्ति है। क्षेत्र में ये क्षेत्रपाल है। मूर्तियां जो उत्कीर्ण हैं, वे क्रमशः चन्द्रप्रभु, नेमिनाथ, वर्द्धमान व पार्श्वनाथ की मूर्ति के नीचे दो दिगम्बर मुनियों की उकेरी हुई मूर्तियां हैं। इस स्तंभ पर भट्टारक पदमनंदी देव तथा शुभचन्द्र देव के नाम सहित चरण चिह्न अंकित हैं व उनके चरण भी बने हुए हैं। इसके नीचे के भाग मे एक शिलालेख संवत् 1843 फाल्गुन शुक्ला 3 गुरुवार का है। इनमें मूल संघ सरस्वती गच्छ, बलात्कारगण, कुन्दकुन्दाचार्य के भट्टारक श्री बसंतकीर्ति देव, विशालकीर्ति देव, दमनकीर्ति देव, धर्मचन्द्र देव, रत्नकीर्ति देव, प्रभाचन्द्र देव, पद्मनंदी एवं शुभचन्द्र देव के नाम दिये गये हैं। यह निषिधिका दिगम्बर आर्यिका आगम श्री की स्मृति में बनाई गई है। उसके निकट ही दूसरा स्तंभ है, जिसमें पार्श्वनाथ, वर्द्धमान, नेमिनाथ और संभवनाथ की प्रतिमाएं टंकोत्कीर्ण हैं। इनके नीचे दिगम्बर मुनियों की प्रतिमाएं बनी हुई है, यह निषिधिका भटटारक शुभचन्द्र के शिष्य हेमकीर्ति की है। इस पर भी एक लेख है जो संवत् 1465 फाल्गुन शुक्ला 2, बुधवार का है।

रेवती कुण्ड के उत्तर दिशा में एक प्राकृतिक चट्टान पर विशाल शिलालेख उत्कीर्ण है; इसमें 42 पंक्तियाँ हैं। यह 19 फुट 3 इंच लम्बा और 5 फुट 8 इंच चौड़ा है। इसमें 92 श्लोक संस्कृत में खुदे हुये हैं। श्लोक नं. 87 में लिखा है कि माथुर संघ में गुणभद्र नामक दिगम्बर महामुनि हुए हैं, उन्होंने ही इस प्रशस्ति को बनाया है। इसका हिन्दी अनुवाद पं. खुशालचन्द जी गोरावाला, बनारस वालों ने किया तथा इसका संपादन अक्षयकीर्ति जी व्यास ने किया है। यह लेख चाहमान, चौहान सोमेश्वर के राज्यकाल में विक्रम सं. 1226 में दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ मंदिर की प्रतिष्ठा दानादि की स्मृति में स्वयं लोलार्क ने करवाया था। एक और शिलालेख रेवती के किनारे एक ऊंची चट्टान पर है, जिसमें 'उन्नत शिखर पुराण' नामक दिगम्बर जैन काव्य ग्रंथ अंकित है। ये शिलालेख इतिहास की दृस्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यहां पर उपलब्ध शिलालेखों का प्रकाशन 'भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ' राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र भाग 4 प्रकाशक-भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुंबई में किया गया है।

उक्त शिलालेख के श्लोक 60 का हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है-

'यहां पर भीम नाम का वन है, जहां जिनराज का वास है, यहां वे शिलाये है, जिन्हें कमठ-शठ ने आकाश से फेंका था। सर्वदा वृद्धिमान यहां वह उद्यान, कुण्ड तथा सरिता है तथा यह वह स्थान भी है जहां पार्श्वनाथ 'परम सिद्धि', केवल ज्ञान को प्राप्त हुये। 'श्लोक नं. 60'

क्षेत्र का अतिशय : संवत् 1814 में यहां अंग्रेज आये, मंदिर के चारों ओर परकोटा और शिलालेख देखकर उन्हें विचार आया कि यहां पर अपार द्रव्य मिलेगा। इसलिये उन्होंने शिलालेख के पास बारूद की सुरंग लगा दी, तभी न जाने कहां से मधुमक्खी एवं भौरों का झुण्ड निकल पडा व उनसे चिपट गया। वे लोग प्राण बचाकर भागे। तभी एक चमत्कार और हुआ कि सुरंग से श्वेत सर्प आया और फण फैलाकर बैठ गया एवं साथ ही सुरंग से दूध की धारा बह निकली। इस अतिशय की कथा यहां लोकगीतों में प्रचलित है। संवत् 1958 में एक चमत्कार और हुआ क्षेत्र पर मूलनायक भगवान की प्रतिमा नहीं होने से बिजौलिया के तत्कालीन राजा कृष्णसिंह जी को प्रेरणा हुई कि भूगर्भ गृह के कोने में प्रतिमा अवश्य विराजमान होनी चाहिए। उनके आदेशानुसार दरबारीगण तथा जैन लोग मजदूरों को लेकर क्षेत्र पर पहुंचे। मंदिर में सोपानतना अंकित पाषाण को उखाड़कर भूमि को खुदवाया परन्तु काफी समय तक परिश्रम करने के बाद भी

आत्मज्ञान रूप पवित्र तीर्थ है (पद्मनन्दि-पंचविंशतिका, चंद्रोदय अ 28)

पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बिजोलियां के दृश्य

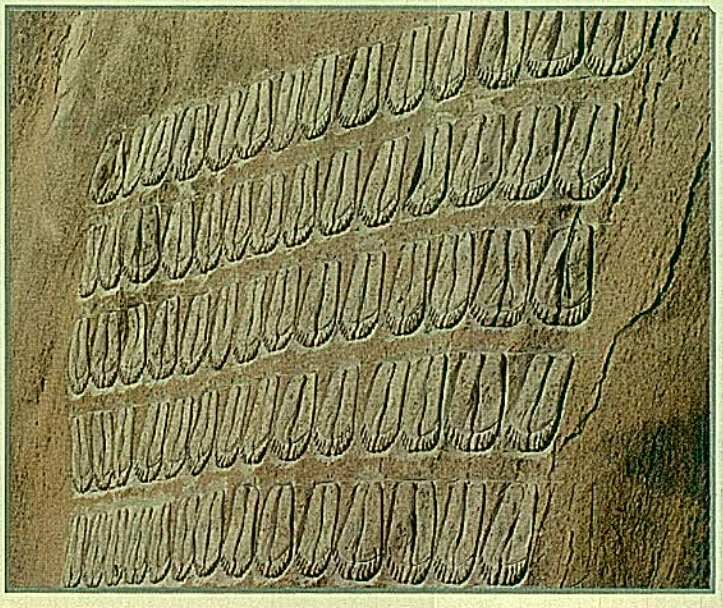

भूमि इंच मात्र भी नहीं खुदी। तभी अकस्मात एक श्वेत सर्प आया और खुदाई के स्थान पर आकर बैठ गया व फुंकारने लगा जिससे लोग भयभीत होकर भाग गये। ऐसे चमत्कारों की अनेक कथाएं यहां पर प्रचलित है। अनेक तीर्थयात्री अपनी मनौतियां मनाने के लिए यहां आते हैं।

निज मंदिर के अंदर शिखर में ताकनुमा वेदी जो कि रिक्त थी, उसमें सन् 2000 मे मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ की भव्य मनोज्ञ प्रतिमा विराजमान की गई। इसके अलावा पूर्व में आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में एक भव्य विशाल जिनालय का निर्माण भी करवाया गया। इसमें जिन चौबीसी खडगासन एवं त्रिमूर्ति खडगासन विराजमान किये गये एवं भव्य पंच कल्याणक प्रतिष्ठा हुई। पार्श्वनाथ गणधर परमेष्ठी जिनालय, समवशरण जिनालय बहुत कलात्मक, पुरातन शैली से निर्मित किये गये हैं।

आज का बिजौलिया तीर्थ क्षेत्र

बिजौलिया । जिस बिजौलिया दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ तीर्थ क्षेत्र को बिजौलिया की दिगम्बर जैन समाज ने 12 वर्ष तक लड़ाई लड़कर, उपसर्ग सहन करके बचाया, उस पावन तीर्थ क्षेत्र को मुनि पुंगव 108 श्री सुधासागरजी महाराज ने सन् 2002 के चातुर्मास में काफी ऊँचाईयों पर जीर्णोद्धार करके, पहुंचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। आज भी 40 गांवों की तीर्थ क्षेत्र कमेटी मुनि की ऋणी है।

1226 में जिस लोलार्क सेठ ने इस तीर्थ क्षेत्र का निर्माण करवाया था और प्रचार-प्रसार के अभाव में यह तीर्थक्षेत्र प्रसिद्धी नही पाया, लेकिन आज भारतवर्ष में यह क्षेत्र प्रसिद्ध हो चुका है और यात्रियों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। यह सारा श्रेय संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के सुशिष्य श्री सुधासागरजी महाराज को जाता है।

मुनिश्री की चातुर्मास की उपलब्धियां :

मुनिश्री का 2002 में चातुर्मास की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि दिसम्बर माह में हिन्दुस्तान के 125 विद्वानों की संगोष्ठी हुई, जिसमें तीन दिन तक लगातार तर्क-वितर्क के बाद इस क्षेत्र को मुनि श्री ने भगवान पार्श्वनाथ की कमठ कृत उपसर्ग स्थली व केवलज्ञान प्राप्ति स्थल घोषित किया। इस क्षेत्र पर दो बड़े शिलालेख हैं, जिस पर प्राकृत भाषा में सारा इतिहास लिखा हुआ है। यहां पर रेवा नदी है, जिसमें कमठ द्वारा फेंकी गई चट्टानें आज भी मौजूद हैं। एक बड़ी चट्टान पर नाग-नागिन के चिह्न भी उत्कीर्ण हैं। इसी क्षेत्र में चट्टान पर भगवान पार्श्वनाथ के दस गणधर के चरण चिह्न व एक हजार केवलियों के चरण चिह्न भी उत्कीर्ण हैं। मुनिश्री ने इस क्षेत्र को लघु सम्मेदशिखर की संज्ञा दी है। चातुर्मास के दौरान नव गणधर परमेष्ठी मंदिर व समवशरण व जिन चौबीसी जिनालय, सभा भवन संतशाला का जीर्णोद्धार हुआ और स्वागत कक्ष, कमेटी कार्यालय भी नये निर्मित किये गये। मुनिश्री के चातुर्मास के बाद सुधा सागर आहार निलय दस कमरों का निर्माण भी कमेटी ने दानदाताओं के माध्यम से करवाया। धीरे-धीरे मुनिश्री के आशीर्वाद व प्रेरणा से तीर्थक्षेत्र कमेटी ने नये-नये निर्माण की श्रृंखला खड़ी कर दी और वह आज तक भी जारी है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि मुनिश्री के आशीर्वाद से यह क्षेत्र सौ वर्ष आगे बढ़ गया।

आचार्य विद्यासागर पब्लिक सी. सेकेण्डरी स्कूल :

मुनिश्री आज के दौरे मंदिर निर्माण के साथ लौकिक शिक्षा के विद्यालय भी खुलवाते जा रहे हैं। बिजौलियां तीर्थक्षेत्र कमेटी ने सन् 2008 में अंग्रेजी माध्यम का स्कूल मुनिश्री के आशीर्वाद व प्रेरणा से खोला और पुण्यार्जकों ने भी विद्यालय भवन निर्माण में खुल कर सहयोग दिया। इस विद्यालय में वर्तमान में ग्यारह सौ छात्र अध्ययनरत हैं और 35 किलोमीटर दूर से स्कूल की 12 बसों में बच्चे इस विद्यालय में पढ़ने आते हैं और 40 टीचर कोटा से प्रतिदिन बस में पढ़ाने आते हैं। णमोकार मंत्र भी प्रार्थना से विद्यालय का अध्ययन सत्र प्रारम्भ होता है। यह विद्यालय अंग्रेजी माध्यम से दिल्ली केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त है।

बड़ी उपलब्धि :

अभी हाल ही में 2015 में मार्च-अप्रैल के दो माह के अल्प समय में मुनिश्री के ससंघ पावन सान्निध्य में तीर्थक्षेत्र पर एक हॉस्टल व संत सुधासागर गर्ल्स पब्लिक स्कूल का शिलान्यास हुआ और एक विशाल मंदिर का शिलान्यास भी हुआ, जिसमें भगवान पार्श्वनाथ बड़े बाबा की 27 फीट बिजौलियां सेण्ड स्टोन की प्रतिमा पद्मासन विराजमान होगी। इस विशाल मंदिर का शिखर नेशनल हाईवे से नजर आयेगा।

धार्मिक संस्कार की नई पहल :

मुनिश्री की भावना थी कि इस बिजौलियां तीर्थक्षेत्र पर नियमित निर्धारित समय पर शांतिधारा व अभिषेक हो और उसका पूरी तरह पालन हुआ। प्रतिदिन भगवान की शांति धारा की बोली से अभिषेक होता है और प्रतिदिन सायंकाल 48 दीपकों से भक्तामर आरती होती है। यह प्रक्रिया मुनिश्री के आशीर्वाद से प्रतिवर्ष प्रत्येक माह व दिन के पुण्यार्जक भी घोषित हो चुके हैं। मुनिश्री की पहल से तीर्थक्षेत्र पर जैन पाठशाला भी प्रारम्भ हो चुकी है, जिसमें बिजौलियां कस्बे के करीब 70-80 बच्चे पढ़ने आ रहे हैं। पूरा वातावरण धार्मिक सा हो गया है।

क्षुल्लक धैर्यसागर महाराज की प्रेरणा से वृक्षारोपण व गार्डन की योजना भी प्रारम्भ की गई जो प्रगति पर है। मूलनायक मंदिर क भी अभी हाल में अच्छा फर्श व रैलिंग बनाकर सुन्दर बनाया गया। यह सब होने से निरन्तर यात्रियों की संख्या बढ़ती जा रही है। मूल मंदिर में प्रातःकाल अभिषेक के लिये बाहर तक लम्बी कतारें भी लगने लगी हैं।

मुनिश्री के विकास के सोपान को गिनना बहुत ही मुश्किल है । यह पंक्तियां चरितार्थ होती हैं -

'जिनके आने से क्षेत्र चमक जाते हैं
जिनके तप से क्षेत्र अतिशयकारी हो जाते हैं।
ये उन महान संत के शिष्य हैं
जिनके हाथों से भगवान निकल जाते हैं।।

महंगी से महंगी घड़ी पहन कर देख ली, वक्त फिर भी मेरे हिसाब से कभी न चला

सं.सिं.सुधीरजी परिवार द्वारा प्रदत्त 180 एकड़ भूमि में गौशाला परिसर में नि:शुल्क औषधालय का शुभारंभ दिनांक 3 जनवरी 2016 को

जैन सोशल ग्रुप के चेयरमैन सुकीति जैन (पूर्व विधायक), मंत्री मुकेश मोदी एवं पदाधिकारियों द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष स.सि.सुधीरजी का सम्मान

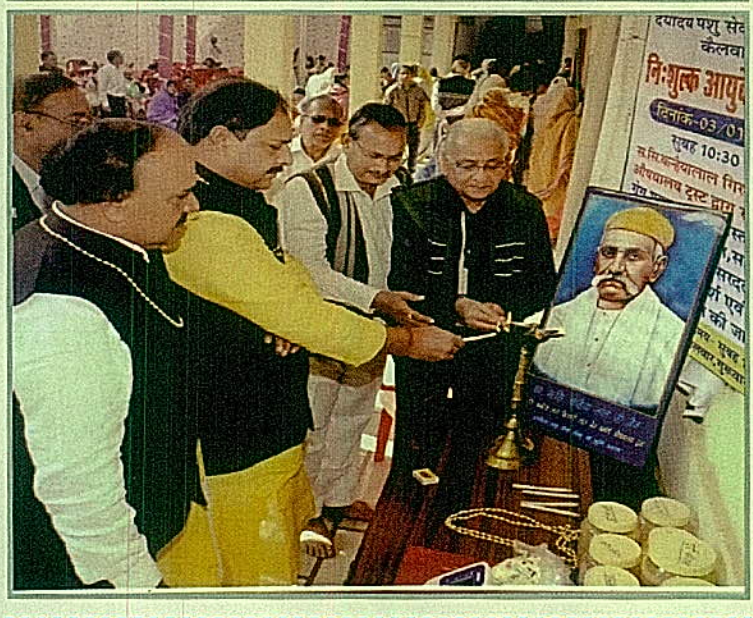

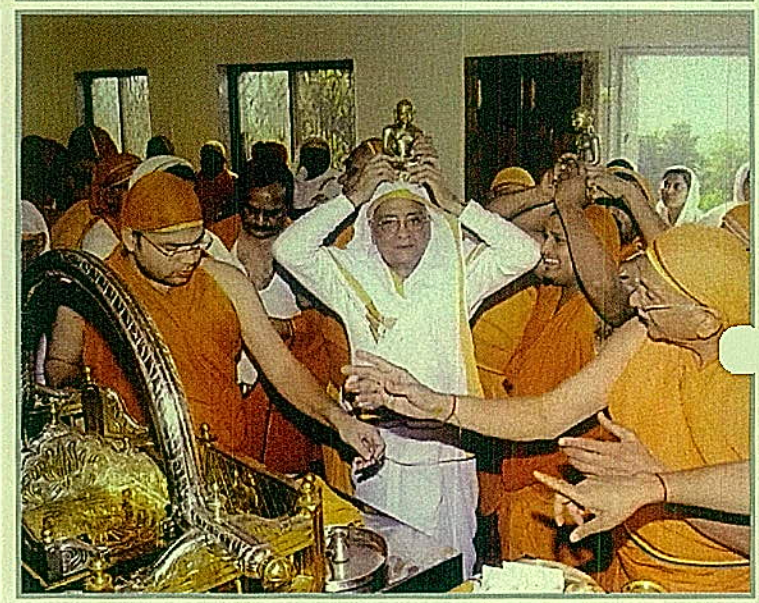

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
स्व.दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

IN THE SERVICE OF NATION 1970 ESTD.

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

देवालय में विराजित जिनदेव तीर्थ हैं - यह व्यवहार का कथन है (योगसार, दो. 4)

हार्दिक अभिनन्दन

अहमदाबाद के जैन समाज के लाडले नेता श्री गौतम भाई शाह को महानगर का महापौर चुना गया, जिसकी औपचारिक घोषणा गुजरात की मुख्यमंत्री श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने की। इस मंगलमय समाचार से भारत का समस्त जैन समाज खुशी से झूम उठा और अपने लोकप्रिय नेता को शुभकामनाएं एवं बधाई दी है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार की ओर से राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर कुमार जैन, कटनी ने बधाई प्रेषित की है। श्री गौतमभाई शाह बहुत ही होनहार और कर्मठ कार्यकर्ता हैं।

कटनी में सम्पन्न हुए इन्द्र ध्वज विधान एवं वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव कार्यक्रम के पश्चात मुनि सुव्रतनाथ भगवान की नवीन वेदी पर विराजमान तीर्थंकर भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ का प्रथम कलश से अभिषेक करने का सौभाग्य तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष स.सिं. सुधीर जैन साथ में उनके सुपुत्र स.सिं. समीर जैन को मिला।

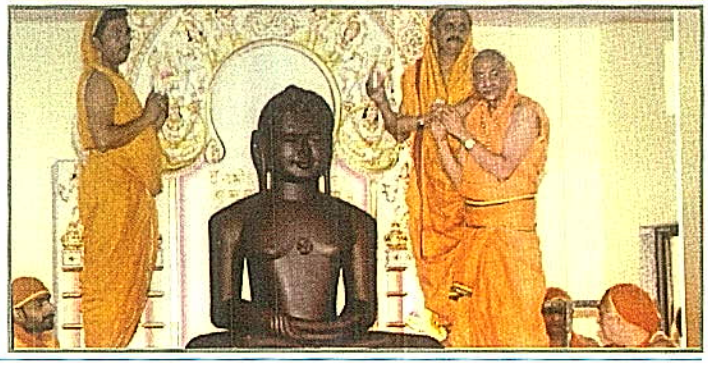

विनम्र अपील

20वीं सदी के प्रथम दिगम्बर आचार्य चारित्र चक्रवर्ती 108 शांतिसागरजी महाराज के जीवन से संबंधित चित्र (फोटो) व जानकारी

सभी धर्मी प्रेमी बंधुओं व श्रावकों से अनुरोध है कि परम पूज्य चारित्र चक्रवर्ती 108 आचार्य शांतिसागर जी मुनिराज की श्रमणचर्या, आचार-विचार, चातुर्मास, पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं, शिक्षण प्रसंगों एवं धार्मिक प्रभावना के कार्यक्रमों से संबंधित चित्र (फोटो) एवं दीक्षा प्रसंगों के छाया चित्रों के संकलन कर ग्रंथ रूप में संग्रहीत करने हेतु पुण्य भाव हुए हैं।

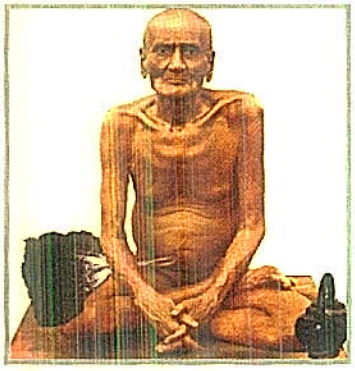

उपलब्ध चित्र (फोटो) एवं जीवन की जानकारी भेजने हेतु करबद्ध निवेदन है कि कृपया उपरोक्त कार्य हेतु आप हमें संपर्क करें एवं सहयोग प्रदान करावें।

निवेदक,
हुकमीचंद
जैन, पांडिचेरी
पता : हुकमीचंद जैन, 415, भारती स्ट्रीट, पांडिचेरी- 605 001, मो. 09345455151, watsup: 09994602496
e-mail: sujitjain79@gmail.com

जीना सरल है, हारना जीतना सरल है, तो फिर कठिन क्या है... 'सरल' होना ही सबसे कठिन है।

भगवान महावीर की मूर्ति स्थापना की दूसरी वर्षगाँठ धूमधाम से मनायी

- स्वराज जैन (टाइम्स आफ इंडिया), नई दिल्ली (मो. 09899614433)

वैशाली (पटना)- जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर के जन्म स्थली वासोकुंड में मूर्ति स्थापना की दूसरी वर्षगाँठ पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। महोत्सव में यू.एस., कनाडा, नेपाल और देश के करीब तीन सौ जैन धर्मावलम्बियों ने भाग लिया। झंडारोहण श्री चमनलाल जैन दिल्ली एवं दीप प्रज्ज्वलन डॉ. एस.के.जैन दिल्ली द्वारा करने के बाद लाल एवं पीले रंग की पोशाक पहने हुए श्रद्धालुओं ने भगवान महावीर के मंदिर में उनकी प्रतिमा की पूजा-अर्चना की, साथ ही जयजिनेन्द्र, जयमहावीर के उद्घोष से पूरा वातावरण गूँज उठा। सायंकाल महाआरती सम्पन्न हुई। रात को कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें सौरभ कुमार, अनामिका जैन (मेरठ), कमलेश जैन बसन्त तिजारा (राजस्थान), नेपाली जी, आदि ने श्रोताओं को अपने काव्य पाठ से सराबोर किया।

सम्पूर्ण विधि-विधान से पूजा-अर्चना के बाद आकर्षक झाँकी, रथयात्रा बैंडबाजे, नफीरी सहित निकाली गई। जो वासोकुंड गाँव होते हुए प्राकृत विद्या जैन संस्थान परिसर स्थित पाण्डुकशिला पहुंची। यहां भगवान के अभिषेक के बाद रथयात्रा मंदिर में वापस पहुंची। जहां पर विशेष पूजा-अर्चना के साथ भगवान को विराजमान किया गया। इसी दौरान डॉ. सच्चिदानंद चौधरी द्वारा लिखित 'क्षीरसागर की खोज' पुस्तक का विमोचन भी किया गया। हजारों की संख्या में भक्तों ने भाग लिया।

जानकारी हो कि जैनधर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की जन्मभूमि सरैया के प्राचीन विदेहकुंड और वर्तमान में वासोकुंड में स्थित है। यहां भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने आधारशिला रखी थी। उक्त भूमि पर वर्षों तक उपेक्षित रहने के बाद आचार्यश्री विद्यानंदजी के आशीर्वाद से भगवान महावीर स्मारक समिति द्वारा विश्व के अनोखे एवं भव्य जैन मंदिर का निर्माण कराया गया एवं भावी निर्माण कार्य प्रगति पर है। वर्ष 2013 में 7 से 1 दिसम्बर को आचार्य श्रुतसागर जी महाराज की देखरेख में भव्य पंचकल्य. कराया गया। इस अवसर पर सर्वश्री राजकुमार जैन (वीरा) दिल्ली, श्री कैलाशचन्द्र जैन पटना, सतीश जैन (SCJ), राकेश जैन गौतम मोटर्स, राजेन्द्र जैन, श्रीपाल जैन, अनिल-उर्मिला जैन कनाडा, यू.एस.से मि. डेनियल एवं रोहन, अनिल जैन, सुधीर जैन, प्रकाश वोहरा, राकेश जैन (जमुनापार), हेमचंद जैन, स्वराज जैन, आदीश जैन सी.ए., सुखमाल जैन, राकेश जैन (जैन मिलन), श्रीमती कमल जैन, ममता जैन आदि उपस्थित थे।

रात में शादी नहीं करेगा जैन समाज
फिजूलखर्ची रोकने के लिए सम्मेलन में लिए गए कई फैसले

बेस्ट दिल्ली, 23 दिसम्बर (ब्यूरो)। जैन समाज रात के वक्त नहीं दिन में शादी सहित अन्य सामाजिक समारोहों का आयोजन करेगा। इस तरह का फैसला जैन संगठनों की तरफ से आयोजित एक सम्मेलन में लिया गया। सम्मेलन में समाज के प्रबुद्ध जनों ने कहा कि फिजूलखर्ची रोकने के लिए ऐसे काम रोकने की जरूरत है जो केवल शान दिखाने के लिए किए जाते हैं। विवाह समारोहों में बढ़ते आडंबर और धन प्रदर्शन को रोकने के लिए दिल्ली के स्थानकवासी जैन समाज की सर्वोच्च प्रतिनिधि संस्था जैन महासंघ की तरफ से यह सम्मेलन आयोजित किया गया।

पीतमपुरा में स्थित महासंघ भवन में आयोजित सम्मेलन में दिल्ली के 85 जैन संघों-सभाओं के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। सम्मेलन में कई प्रस्तावों पर गहन चिंतन किया गया। विवाह समारोह रात में करने, महंगे निमंत्रण पत्र और उपहार देने की परंपरा को बंद करने के प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पास किया गया। लड़के के विवाह में 100 रुपए से ज्यादा का शगुन न लिया जाए और न दिया जाए। सड़क पर डांस और आतिशबाजी का प्रयोग बंद किया जाएगा। यदि किसी जैन परिवार के विवाह समारोह में शराब का प्रयोग होगा तो उस विवाह समारोह में समाज के सदस्य भाग नहीं लेंगे। इस तरह के भी प्रस्ताव सम्मेलन में पास किए गए। सम्मेलन में महासंघ के महामंत्री प्रो. रतन जैन, पूर्व उपप्रधान श्री मदनलाल जैन, पूर्व महामंत्री श्री कश्मीरी लाल जैन, क्षेत्रीय अध्यक्ष श्री जगदीश जैन के साथ श्री नरेश खींवेसरा, श्री वेदप्रकाश जैन, श्री अनिल जैन, श्री जयभगवान जैन, श्री राधेश्याम जैन, श्री श्रीपाल जैन, श्री बिजेन्द्र जैन, श्री नरेश जैन, श्री रामशरण जैन व श्री मुकेश जैन आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

आदमी भवनों से नहीं, भावना से श्रेष्ठ बनता है

जटवाड़ा में 2792 दीपकों से आरती

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र जैनगिरि जटवाड़ा में वार्षिक यात्रा महामहोत्सव एवं पंचामृत अभिषेक सम्पन्न

- देवेन्द्र कुमार काला, औरंगाबाद

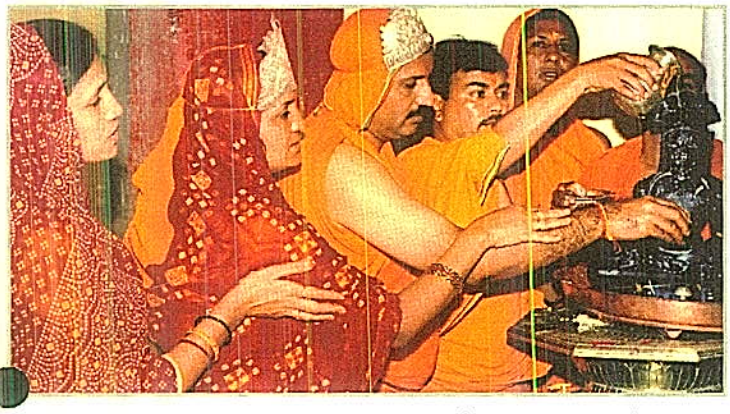

श्री 1008 संकटहर पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र जैनगिरि जटवाड़ा में प्रतिवर्ष की तरह इस बार भी वार्षिक यात्रा महामहोत्सव का आयोजन उत्साह के साथ किया गया।

संकटहर पार्श्वनाथ भगवंत के 2792वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में महाअर्चना एवं महाआरती यात्रा का आयोजन किया गया। यात्रा महोत्सव में आचार्यश्री 108 देशभूषणजी महाराज के परम्परा के श्रमण रत्नाकर आचार्यश्री सुबलसागरजी महाराज एवं आचार्यश्री बाहुबली सागरजी महाराज की शिष्या गणिनी आर्यिका सरस्वती माताजी, आर्यिका विशालमति माताजी, आर्यिका अनंतमति माताजी, आर्यिका महोत्सवमति माताजी और आर्यिका सुभद्रामति माताजी का सुसान्निध्य मिला। वार्षिक यात्रा महोत्सव के लिए 4 जनवरी को दोपहर में जटवाड़ा क्षेत्र में आर्यिका संघ का आगमन हुआ। इस उपलक्ष्य में माताजी के सान्निध्य में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन रखा गया था। भगवान पार्श्वनाथ के 2792वें जन्मकल्याणक महोत्सव के उपलक्ष्य में 2792 दीपकों से भगवंत की आरती की गई।

प्रथम श्री रमणलाल, शिखरचंद, नंदलाल, विजयकुमार महावीर, मनोज कासलीवाल परिवार अंबेलोहलवाला, औरंगाबाद की ओर से कल्याण मंदिर विधान सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात श्रीमती कंचनबाई कल्याणमलजी ठोलिया एवं संदीप ठोलिया परिवार, बेगमपुरावाला, औरंगाबाद के शुभ हस्ते धर्म ध्वजारोहण किया गया। विद्यासागर रावसाहब बडबडे के साग्रह संगीत में संकटहर पार्श्वनाथ भगवंत का पंचामृत अभिषेक सम्पन्न हुआ। इस समारोह के इन्द्र-इन्द्राणी सौ. मंजुषा संदीप ठोले थे। शांति मंत्र का अभिषेक अजित नेमीचंद पाटणी ने किया तथा अर्चना फल सौ. सुवर्णा बुरसे, जालना ने अर्पण किया। भगवंत के जन्म कल्याणक महोत्सव के निमित्त 2792 दीपकों से आरती प्रा. डॉ. सुरेश शहा औरंगाबाद द्वारा की गई। यात्रा उपलक्ष्य में कल्याण मंदिर विधानकर्ता कासलीवाल परिवार अंबेलोहलवाला की ओर से महाप्रसाद दिया गया।

प्रतिवर्षानुसार दोपहर में वार्षिक सभा सम्पन्न कर शाम को महाआरती शास्त्र पठन हुआ। वार्षिक यात्रा के उपलक्ष्य में मंदिर परिसर में आकर्षक रोशनाई की गई थी। यात्रा समारोह में सर्वश्री भरत डोगरे, सौ. सुचिता सेठी, नेमीचंद कासलीवाल, न्या. कैलासचन्द चांदीवाल, निलेश सेठी, धीरज पाटणी आदि महानुभावों का सहयोग रहा। क्षेत्र की यात्रा सफलता हेतु अध्यक्ष सर्वश्री सुरेन्द्रसा साहुजी, महामंत्री देवेन्द्र कुमार काला, कोषाध्यक्ष प्रकाशचंद कासलीवाल, माणिकचंद गंगवाल, ललित पाटणी, अशोक अजमेरा, महावीर साहुजी, एड. एम.आर.बड़जाते, संजय पाटणी, मनोज चांदीवाल, शांतिनाथ गोसावी, मंगला गोसावी, अशोक गंगवाल, तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष श्री प्रमोद कुमार जैन कासलीवाल आदि ने प्रयास किए। इस प्रसंग पर हजारों की संख्या में श्रावक श्राविका उपस्थित थी।

संकट से घबराएं नहीं - आर्यिका सरस्वती माताजी

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र जैनगिरि जटवाड़ा में वार्षिक यात्रा महामहोत्सव में आर्यिका माताजी ने कहा कि भगवान पार्श्वनाथ पर भी कई बार संकट आए, लेकिन उन्होंने शांति के साथ उन्हें सहन किया। इसी प्रकार मनुष्य को भी संकट आने पर शांति के साथ उसका सामना करना चाहिए। उन्होंने कहा कि भगवान का जन्म बार-बार नहीं होता है, यही कारण है कि भगवान का जन्मोत्सव उत्साह के साथ मनाना चाहिए। तीर्थक्षेत्र के विकास के लिए समाज एक साथ आए। माताजी ने कहा कि दान धर्म से कभी कमी नहीं होती, भगवान की 552 वर्ष पुरानी मूर्ति का महत्व भी उन्होंने इस अवसर पर विशद किया।

धम्मो दयाविसुद्धो (आ.कुन्द-कुन्द : बोधपाहुड, गा.25)। अर्थ- शुद्ध भाव से युक्त दयाधर्म हैं।

सीएम के कार्यक्रम को ले दिखा उत्साह

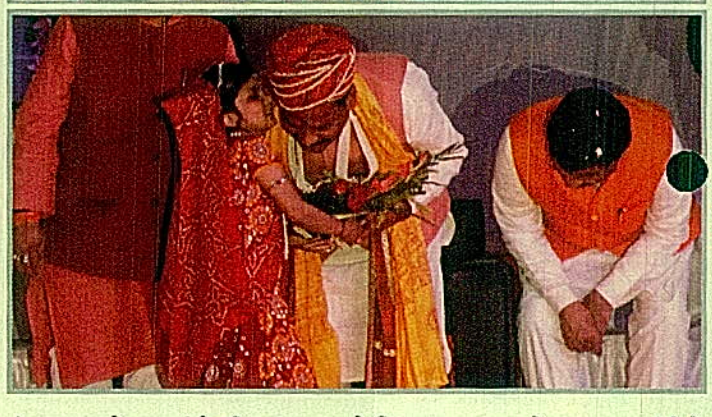

गिरिडीह । जैनियों के विश्वप्रसिद्ध तीर्थस्थल मधुबन में मंगलवार को सुबह से ही कार्यक्रम का दौर चलता रहा। सभी कार्यक्रमों में लोगों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। आचार्यश्री विमल सागर जन्म शताब्दी महोत्सव समिति द्वारा श्री दिगम्बर जैन मध्य लोक शोध संस्थान में आयोजित तीन दिवसीय विमल आराधना महोत्सव के तहत मंगलवार की प्रातः विमल धारा, शांति धारा, पूजन व आरती समेत कई धार्मिक अनुष्ठान हुए। धार्मिक अनुष्ठान के आयोजन से माहौल भक्तिमय हो उठा। इसके बाद दोपहर में मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास की अध्यक्षता में विनयांजली सभा का आयोजन किया गया। सभा में जैन समाज कोडरमा द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। संध्या छह बजे विमल समाधि मंदिर में मंगल आरती की गई। वहीं मध्य प्रदेश के रूपेश जैन एंड पार्टी द्वारा विमल भक्ति संगीत का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को लेकर पूरे मधुबन में उत्साह का माहौल दिखा। मुख्यमंत्री द्वारा मधुबन को अंतरराष्ट्रीय तीर्थस्थल के रूप में विकसित करने व मधुबन को आदर्श सिटी बनाने की घोषणा से लोग काफी उत्साहित दिखे। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास ने आचार्य व साध्वियों से आशीर्वाद भी लिया ।

मौके पर अपर समाहर्ता श्री रवीन्द्र कुमार सिंह, जिला गोपनीय प्रभारी श्री डी.के.गौतम, डीएसपी श्री शंभुकुमार सिंह, एसडीपीओ श्री राजकुमार मेहता, पीरटांड थाना प्रभारी श्री रुखसार अहमद, गावां थाना प्रभारी श्री श्रीनिवास प्रसाद, खुखरा थाना प्रभारी श्री चंद्रमोहन उरांव, संजीव जैन, प्रद्युमन जैन, सुमन सिन्हा, भाजपा जिलाध्यक्ष श्री अशोक उपाध्याय, भाजपा झुग्गी-झोपड़ी प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक श्री सुरेन्द्र बर्मन, जिप सदस्य कामेश्वर पासवान, श्याम प्रसाद, बबलू साव, संजीत सिंह आदि थे।

मधुबन थाना का किया उद्घाटन :

गिरिडीह। पीरटांड प्रखंड के मधुबन में बने थाना का उद्घाटन मंगलवार को मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास ने किया। उद्घाटन के बाद मुख्यमंत्री ने थाना के स्वागत कक्ष व सिरिस्ता का भी मुआयना किया। इस दौरान गिरिडीह विधायक श्री निर्भय कुमार शहाबादी, जमुआ विधायक श्री केदार हाजरा, डीजीपी डीके पांडेय, एडीजी एसएन प्रधान, आईजी तदाशा मिश्रा, डीएसपी शंभु कुमार सिंह, विजय आशीष कुजूर आदि मौजूद थे। इसके बाद मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास मधुबन के निहारिका भवन पहुंचे। यहां पर कलश मंदिर का दर्शन किया और आरती भी की। कलश मंदिर में आरती करने के बाद सीएम पैदल ही शाश्वत भवन पहुंचे। इस दौरान मुख्यमंत्री ने सड़कों की भी स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने प्रशासनिक अधिकारियों को कई आवश्यक निर्देश भी दिये।

घमंडीलाल जैन भवन का किया लोकार्पण : मधुबन दौरा के दौरान मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास ने श्री सम्मेदशिखर विकास समिति द्वारा निर्मित घमंडीलाल जैन भवन का भी लोकार्पण किया। मौके पर उनके साथ गिरिडीह सांसद श्री रवीन्द्र पांडेय, विधायक श्री निर्भय कुमार शहाबादी, संस्था के अध्यक्ष सर्वश्री जीवेन्द्र जैन, महामंत्री प्रवीण जैन, अशोक जैन, छितरमल पाटनी, इंद्रदेव शर्मा, सुजीत सिन्हा, अवधेश आदि थे।

विमल समाधि मंदिर का किया दर्शन : विमल आराधना महोत्सव में शामिल होने से पूर्व मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास विमल समाधि मंदिर भी गये। वहां पूजा-अर्चना के बाद मुख्यमंत्री पैदल ही मध्य लोक संस्थान पहुंचे। इस क्रम में उनका भव्य स्वागत किया गया। परंपरागत तरीके से मुख्यमंत्री को मध्य लोक लाया गया। पैदल यात्रा के दौरान महोत्सव समिति ने पुष्प वर्षा की। वहीं कार्यक्रम स्थल पर दिगम्बर जैन समाज कोडरमा ने सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया। आयोजकों ने मुख्यमंत्री को प्रतीक चिह्न भेंट किया।

- छीतरमल जैन पाटनी, हजारीबाग

तीर्थ दो प्रकार के हैं - द्रव्य तीर्थ (सम्मेदशिखर, चम्पापुरी, पावापुरी आदि) और भावतीर्थ (सम्यग्ज्ञान, सम्यक तप, संयम आदि) (मूलाचार, गा. 560)

झारखण्ड सरकार द्वारा मधुबन एवं पारसनाथ हिल के विकास कार्यक्रमों में क्षेत्र को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने एवं पारसनाथ हिल पर हैलीपैड बनाने की योजना

जैसा कि आप सभी को विदित ही है कि झारखण्ड सरकार मधुबन क्षेत्र की तलहटी के विकास के लिए अनेक अमिट योजनाएं बना रही है। जिसमें सुगम रास्ते, अच्छे ट्रांसपोर्ट की सुविधा, ढंकी हुई नालियों का निर्माण, शुद्ध पेयजल एवं बिजली की उपलब्धता, शुद्ध शाकाहारी, व्यसन मुक्त वातावरण के साथ मधुबन ग्राम का सौंदर्यीकरण की अनेक योजनाएं हैं। अभी-अभी माननीय मुख्यमंत्री श्री रघुबर दास जी जब मधुबन पधारे थे तो वहां की समाज ने उनका पूरे जोर-शोर से स्वागत किया था उस समय मुख्यमंत्री जी ने पारसनाथ पहाड़ पर हैलीपैड बनाने एवं मधुबन को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किये जाने की घोषणा की है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने इस बारे में मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर पारसनाथ हिल पर हैलीपैड बनाये जाने एवं शिखर क्षेत्र को पर्यटन स्थल के रूप में रुपांतरित करने का विरोध किया है और सरकार से यह निवेदन किया है कि श्री सम्मेदशिखर जी क्षेत्र जैनसमाज का सर्वोच्च स्थल है। यहां देश-विदेश से हजारों तीर्थयात्री श्रद्धा भाव से 27 कि.मी. की पर्वतराज की पदयात्रा कर अपना जीवन धन्य मानते हैं। झारखण्ड सरकार द्वारा यदि इसे पर्यटन स्थल के रूप में रुपांतरित कर दिया गया तो उससे इसकी गरिमा एवं पवित्रता भंग हो जायेगी और लोग पिकनिक स्पाट के रूप में यहां जाना-आना आरम्भ कर देंगे।

तीर्थराज सम्मेदशिखर की पवित्रता अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए यह आवश्यक है कि क्षेत्र को धर्मस्थल ही रहने दिया जाय पर्यटन स्थल न बनाया जाय तथा पर्वत पर हैलीपैड, रोपवे (झूला) या अन्य ऐसे निर्माण कार्य न कराये जाएं जो धर्म संगत न हो।

समाज की सभी राष्ट्रीय संस्थाओं- महासभा, महासमिति, दिगम्बर जैन परिषद, दक्षिण भारत जैन सभा आदि समाज की सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं धर्मानुरागी सभी धर्मप्रेमी बंधुओं से निवेदन है कि वे भी सम्मेदशिखर जी क्षेत्र को पर्यटन स्थल के रूप में परिवर्तित न करने एवं पहाड़ पर हैलीपैड बनाकर उसकी पवित्रता को नष्ट न करने के बारे में अपनी ओर से अलग-अलग पत्र माननीय मुख्यमंत्री झारखण्ड सरकार को निम्नलिखित पते पर भिजवाने की कृपा करें।

माननीय मुख्यमंत्री श्री रघुबर दास जी
सचिवालय, पहली मंजिल
प्रोजेक्ट बिल्डिंग, रांची (झारखण्ड)
ई-मेल : cs-jharkhand@nic.in

पंकज जैन
महामंत्री

सुधीर जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

किस्मत कितनी ही बुलंद क्यों न हो, उसे परिश्रम की 'चौखट' से गुजरना पड़ता है।

।। हार्दिक आमंत्रण ।।

श्री कुन्दकुन्द कहान शाश्वत् पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा संचालित

संस्कार तीर्थ

शाश्वत धाम

एवरेस्ट आशियाना, एअरपोर्ट रोड, डबोक, उदयपुर- २४

श्री रत्नत्रय विधान

शुक्रवार, दि. २२ अप्रैल २०१६

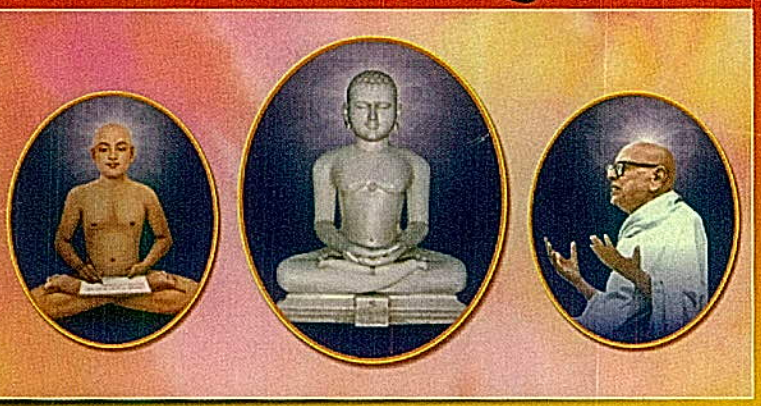

श्री सीमंधर जिनालय वेदी शिलान्यास महोत्सव

शनिवार, दि. २३ अप्रैल २०१६

अतिथि निवास कन्या छात्रावास भवन उद्घाटन समारोह

रविवार, दि. २४ अप्रैल २०१६

जैन बालिका संस्कार संस्थान | जैन दर्शन कन्या महाविद्यालय उदयपुर

सम्पर्क सूत्र : 97235 50590, 97235 50592, 94141 03492

Email: info@shashwatdham.com • www.shashwatdham.com

Shri Munisuvratnathaya Namah Shri Shantinathaya Namah Shri Rishabhdevaya Namah Shri Parshvanathaya Namah Shri Mahaviraya Namah

Please Welcome

First time in Pancham-Kal
The Celebration Beyond Imagination

Please Welcome

108 Ft. High Bhagwan Rishabhdev International Panchkalyanak Pratishtha & Mahamastakabhishek Mahotsava

Panchkalyanak-11th Feb. to 17th Feb. 2016 Mahamastakabhishek Starts-18th Feb. 2016

-Venue-
Rishabhgiri, Mangitungi Siddhakshetra
(Nasik) Maharashtra

-Tithi-
Magh Shukla Tritiya to Dashmi
Veer Nirvan Samvat 2542

Charitra Chakravarti
Prathmacharya
Shri Shantisagar Ji
Maharaj

Chief Presence

Saptam Pattacharya
Acharya
Shri Anekantsagar Ji
Maharaj

-Charman-
Karmayogi Peethadheesh
Shri Ravindra Keerti Swamiji

-Inspirator of Idol Construction-

First Pattacharya
Acharya Shri Veersagar Ji
Maharaj

Ganini Aryika
Shiromani
Shri Gyanmati Mataji

-Guidance-
Pragyashramni Aryika
Shri Chandnamati Mataji

-Pratishthacharya-

Bal Br. Vijay Kumar Jain, Jambudweep
Pt. Naresh Jain, Hastinapur
Pt. Deepak Upadhye, Sangli
Pt. Pradeep Jain 'Madhur', Mumbai
Pt. Vrishabhsen Upadhye, Malgaon
Pt. Satendra Jain, Tivri-Jabalpur
Pt. Sammed Upadhye, Sajni

-Note-
"Whole Function will be engraced with the holy presence of many Acharyas, Upadhyays, Munis, Aryikas, Ailaks, Kshullak-Kshullikas etc. Digambar Jain Saints & Tyagi Vratis"

Chief Indras of Mahotsava

-Saudharm Indra-
Shri J.C. Jain-
Sau. Suneeta Jain
Haridwar (Uttarakhand)

-Mata-Pita of Bhagwan-
Dr. Pannalal Papdiwal-
Sau. Kumkumdevi Papdiwal
Paithan (Maha.)

-Maha-Yagyanayak-
Shri Pramod Kumar Jain
Sau.Anima Jain
Model Town, Delhi

-Dhankuber-
Shri Manoj Kumar Jain-
Sau. Namita Jain
Meerut (U.P.)

Nomination of Remaining Chief Indras & Characters is in quick process, Lucky devotees can intimate us soon.

Programme Over View

Panchkalyanaka Mahotsava

Date	Day	Main Event
11th Feb. 2016	Thursday	Flag Hoisting
12th Feb. 2016	Friday	Yagmandal Vidhan
13th Feb. 2016	Saturday	Garbhkalyanak
14th Feb. 2016	Sunday	Janmakalyanak
15th Feb. 2016	Monday	Deekshakalyanak
16th Feb. 2016	Tuesday	Kevalgyankalyanak
17th Feb. 2016	Wednesday	Mokshakalyanak

Mahamastakabhishek Programme

-18th to 20th Feb. 2016-
Serially by Main First Kalash, Indras of Class-1, 2, 3 & Panchamrit Mahamastakabhishek

-21st Feb. 2016, Sunday-
By the Kalash holders of Surat & Gujrat

-22nd Feb. 2016, Monday-
By the Kalash holders of Capital Delhi & Mumbai

-23rd to 26th Feb. 2016 Tue. to Fri.-
By the Kalash holders of Maharashtra, Rajasthan, Uttar Pradesh, Haryana, Poorvanchal etc. states

-27th Feb. 2016, Saturday-
By the Kalash holders of Ahmedabad, Gujrat

-28th Feb. 2016, Sunday-
By the Kalash holders of Indore, Madhyapradesh & Chhatisgarh

-29th Feb. 2016, Monday-
Kalash holders of Maharashtra, Karnatak, Sangli, Kolhapur, Belgaon etc. districts.

आत्मज्ञान रूप पवित्र तीर्थ है (पद्मनन्दि-पंचविंशतिका, चंद्रोदय अ 28)

Indra-Indrani Donation Amount

Brahma-Brahmottar etc. Main Indras
5,51,000/-
Indra-Indrani (First Category)
1,00,000/-
Indra-Indrani (Second Category)
51,000/-
Indra-Indrani (Second sub-category)
(This is applicable only for donors of 108000/- {Murti Nirman} based on special Consideration)
27,000/-
Seating arrangement as per amount paid for Indra-Indrani
All Indra-Indrani Photos will be published in Historic Grantha

Mahamastakabhishek Donation Amount

Kalash	Donation Amount	Allowed Members
1. Maha Divya Kalash	5,00,000/-	11
2. Divya Kalash	2,51,000/-	9
3. Ratna Kalash	1,00,000/-	7
4. Swarn Kalash	51,000/-	5
5. Rajat Kalash	25,000/-	4
6. Bhakti Kalash	11,000/-	3

Online Payment Details

A/c Name B.R.P.P.M. Samiti Mangitungi

Bank-S.B.I. A/c No.-35167654603 (IFSC Code-SBIN0000472) Branch-Satana

Bank-P.N.B. A/c No.-3704002100007589 (IFSC Code-PUNB0370400) Branch-Hastinapur

Note-Please notify on below nos. after depositing Donation amount

Historical Opportunity on Ending Mode "Get a golden chance to donate 108000/- for Murti Nirman"

The Carving work of world's highest idol of 108 feet, at Mangitungi, is about to complete now. Therefore we request all those families, who have still not donated 108000/- for this world-class idol of Digambar Jain tradition, they should take an ultimate & last chance of donating 108000/- for it. Four names of each donor-family will be inscribed on the Stone-Plate at Murti Premises.

All donors of Murti Nirman can also have a chance to become Indra-Indrani in Panchkalyanak with the donation of 1,00,000/-Rs. or 51000/-Rs. or 27000/-Rs. If you cannot spare your time for whole Panchkalyanak then the facility for doing Abhishek on highest idol of Lord Rishabhdev will be given by the Samiti in between 22nd Feb. to 27th Feb. 2016.

-Important Information-

(1) Those who want to get the Panchkalyanak of their own idols done, should give these to Pratishthacharya upto 15th Jan. 2016 at Mangitungi.

(2) During Panchkalyanak, accommodation facilities for all Indra-Indranis will be arranged by Samiti form 11th Feb. 2016. Even though, if some of the Kalashkarta-people want to attend whole Panchakalyanak, then they must book a room with intimating their arrival information and number of coming members to our Awas Office soon.

(3) Because of exams of children or some other reasons, those Kalashkarta, who are unable to attend Abhishek in between 18th to 29th Feb., they would be able to do Abhishek in first week of March 2016 also.

(4) All Kalashkarta of range 5100/- & 11000/-Rs. will get free accommodation after 21st Feb. 2016.

(5) For security purpose, please don't bring precious ornaments etc. with you.

(6) Those who have not taken any chance for Indra-Indrani or Kalash, will be able to book their accommodation through paid system.

Listen Special Informations about Mangitungi Panchkalyanak & Mangal Pravachans of Pujya Mataji

पारस — Everyday 9 P.M. & 6 A.M.

जिनवाणी JINVANI — Everyday 3.30 P.M.

Specially Watch Live Telecast Daily on Paras Channel - 7.15 A.M. to 8.05 A.M.

07599002108

To have unique informations daily on WhatsApp, Plz save 07599002108 in your mobile with the name of 'Gyamati Network' & send a whatsapp-message on it writing "Join Me"

The old Mob. No. for Whatsapp, which was being run by Mahotsava Samiti, has been closed now. Therefore please add new Mob. No. given above for daily updates on Whatsapp.

Bhagwan Rishabhdev 108 Ft. Vishalkaya Murti International Panchkalyanak Pratishtha & Mahamastakabhishek Mahotsav Samiti
P.O.-Mangitungi (Nasik) Maha.

Contact-09405232008, 09457817324, 09411025124, 09403688133, 09422206158, 09405232053/54 (Accommodation Off.), 02555-286523 (Mangitungi Off.), 01233-280184 (Hastinapur Off.)
Website : www.highestjainidolinworld.com,www.jambudweep.org, www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : badimurtimangitungi@gmail.com, Facebook : jaintirthjambudweep

णिग्गंथ वीयराया जिणमग्गे एरिसा पडिया । अर्थ- जिन प्रतिमा निर्ग्रन्थ, वीतराग होती है (बोधपाहुड़, गा.10)